“I don't *‘act’* - I *‘live’* a character”

Acting

05 • पटना • रविवार • 28 सितम्बर 2014 हिन्दुस्तान

दोनों पक्ष ने तोड़ी मर्यादा..., कौरव ने ज्यादा

पटना | कार्यालय संवाददाता

टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर चुकी मर्यादा...उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा... पांडव ने कुछ कम, कौरव ने कुछ ज्यादा...जब ये संवाद गूंज रहे थे, तब कालिदास रंगालय में बैठे दर्शकों की खामोशी कुछ और ही कह रही थी। सब एक झटके में नाटक से बंध गए थे।

धर्मवीर भारती लिखित 'अंधा युग' नाटक पहले दृश्य से ही दर्शकों को बांधे रहा। सुमन कुमार के निर्देशन में बिहार आर्ट थियेटर के कलाकारों ने इसे प्रभावी बनाने की अच्छी कोशिश की। सुनीता भारती (गांधारी), विशाल तिवारी (धृतराष्ट्र), इरफान अहमद, डॉ. शंकर सुमन आदि ने बेहतरीन अभिनय किया। प्रदीप गांगुली, विशाल तिवारी और उपेंद्र कुमार ने मंच परे योगदान दिया।

शनिवार को कालिदास रंगालय में अंधा युग नाटक का एक दृश्य। • हिन्दुस्तान

बेहतरीन अभिनय

युद्ध भूमि का धूसर रंग, टूटा हुआ रथ, तीर-धनुष, सब कुछ इस अंदाज में मंच पर दिखा कि हकीकत लगने लगा। शानदार मंच व प्रकाश परिकल्पना का ही जादू था कि दर्शक पहले दृश्य में ही बंध गए। इसके बाद विशाल तिवारी ने धृतराष्ट्र की शानदार भूमिका से दर्शकों को पूरी तरह बांध लिया। महाभारत के 18वें दिन की संध्या से लेकर श्रीकृष्ण की मृत्यु तक की कहानी को जीवंत करने में अन्य कलाकारों ने भी अच्छी भूमिका निभाई। किस तरह पुत्र दुर्योधन की अस्थि-शेष देखकर गांधारी धैर्य खो बैठती है, कैसे कृष्ण को श्राप देती है। और आखिर कैसे बहेलिए के हाथों कृष्ण मारे जाते हैं, इसको प्रभावी तरीके से मंच पर उतारा गया।

कालिदास रंगालय में अंधा युग नाटक का मंचन करते कलाकार जागरण

अंधा युग दिखा गया युद्ध की सच्चाई

थियेटर

'प्रभु हो या परात्पर, कुछ भी हो तुम्हारा सारा वंश इसी तरह पागल कुत्तों की तरह एक दूसरे को फाड़ खायेगा। प्रभु हो पर मारे जाओगे पशुओं की तरह'। यह बातें अपने पुत्रों के महाभारत युद्ध में मारे जाने के बाद गांधारी भरी सभा में श्रीकृष्ण को शाप देते हुए कहती हैं। कालिदास रंगालय में नाट्योत्सव के दूसरे दिन धर्मवीर भारती की बीसवीं सदी की सर्वश्रेष्ठ कहानी अंधा युग का मंचन हुआ। अंधा युग महाभारत के युद्ध की संध्या से लेकर प्रभास क्षेत्र में श्रीकृष्ण के मृत्यु तक की कहानी है। महाभारत के युद्ध में मानवता, मूल्य और मर्यादा की भी बलि चढ़ती है। धृतराष्ट्र केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि आत्मिक अंधेपन के भी प्रतीक हैं, जो पुत्र मोह में मर्यादा और नैतिकता की अनदेखी कर महाभारत जैसी युद्ध की भूमिका तैयार करते हैं। इस घटना से गांधारी की भी बुद्धि भ्रमित हो जाती है। वह युद्ध का उत्तरदायी भगवान कृष्ण को मानती हैं और उन्हें शाप देती हैं जिसे कृष्ण स्वीकार करते हैं और कहते हैं - अट्ठारह दिनों के इस भीषण संग्राम में कोई नहीं केवल मैं ही मरा हूं करोड़ों बार।

1st Show

प्रभात खबर
www.prabhatkhabar.com
सिटी लाइफ

बिहार आर्ट थियेटर ने किया नाटक का मंचन

नाटक अंधा युग का दृश्य।

कौन बचाये अंधे युग से

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अंधा युग कभी नहीं जा सकता. अंधा युग तब भी था, जब महाभारत युद्ध चल रहा था और आज भी है. गांधारी और धृतराष्ट्र की तरह आज के जमाने में भी सरकारें अंधी बन कर चल रही हैं. ऐसी ही कुछ बातों को बिहार आर्ट थियेटर रेपेटरी द्वारा गुरुवार को नाटक 'अंधा युग' द्वारा प्रस्तुत किया गया. धर्मवीर भारती द्वारा लिखित इस नाटक को 20वीं सदी का सर्वश्रेष्ठ हिंदी नाटक भी घोषित किया गया. निर्देशक सुमन कुमार ने नाटक को बेहतर दिखाने के लिए सेट पर विशेष ध्यान दिया.

नाटक की शुरुआत दो प्रहरी के बातचीत से शुरू होती है. वे आपस में महाभारत की बातें कर रहे थे. 'यह महायुद्ध के अंतिम दिन की संध्या है. चारों ओर उदासी गहरी छायी है. कौरव के महलों का सूना गलियारा है. घूम रहे केवल दो बूढ़े प्रहरी'. दोनों प्रहरी के संवाद ने दरसा दिया था कि यह कहानी महाभारत के आखिरी दिन की है. इस संवाद के तुरंत बाद ही मंच पर दिख रहे दो प्रहरी ने सूत्रधार बनने का काम किया और नाटक अंधा-युग के बारे में दर्शकों को बताया.

नाटक का मंच सज्जा ही नाटक की कहानी कह रहा था. एक तरफ बैठे गांधारी और धृतराष्ट्र, तो दूसरी तरफ कथा को गायन के रूप में कहनेवाले कलाकार. बिहार आर्ट थियेटर के नये और पुराने स्टूडेंट्स ने मिल कर इस नाटक को पूरा किया. नाटक के निर्देशक वरिष्ठ रंगकर्मी और वरिष्ठ निर्देशक हैं, जिस कारण नाटक में काफी गंभीरता दिखायी दी. मंच से लेकर मंच के पीछे (ग्रीन रूम) तक इसी गंभीरता ने कठिन नाटक को भी हल्का बना दिया.

यह है कथा वस्तु

यह नाटक महाभारत के अठारहवें दिन के शाम से लेकर प्रभास क्षेत्र में कृष्ण की मृत्यु तक की कहानी है. प्रतीक-शैली की इस नाटक में धृतराष्ट्र महत्वाकांक्षा और स्वार्थ जैसी अंधी प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं. अंधा-युग हर उस युग की कहानी है, जिसमें इस प्रकार की अंधी प्रवृत्तियां पनपती हैं, और समाज से प्रकाश की लौ लुप्त हो जाती है. आज जहां भी युद्ध होता है, वहां पर सबसे पहले मानवता, मूल्य और मर्यादा ही मरती है. यही महाभारत में भी हुआ था. मर्यादा और नैतिकता को अनसुनी करनेवाले धृतराष्ट्र को पुत्र-शोक की भयानक अग्नि में जलना पड़ता है. विह्वल गांधारी पुत्र दुर्योधन के अस्थि शेष को देख धैर्य और विवेक खो देती है और कृष्ण को इसका उत्तरदायी समझते हुए उन्हें शाप देती है, जिसे कृष्ण स्वीकार भी कर लेते हैं. वे कहते हैं कि चेतन सत्य के प्रतीक हैं, जो सब में मौजूद हैं. यह कहानी एक व्याध के हाथों कृष्ण की मृत्यु के बाद खत्म होती है.

यह संवाद रहा बेहतरीन

- टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी है मर्यादा, उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है. पांडव के कुछ कम, कौरव ने कुछ ज्यादा. यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है. यह अजब युद्ध है. नहीं किसी की भी जय. दोनों पक्षों को खोना ही खोना है. अंधों से शोभित था युग का सिंहासन. दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन. अधिकारों का अंधापन जीत गया. जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था, वह हार गया... द्वापर युग बीत गया.
- अठारह दिनों के इस भीषण संग्राम में, कोई नहीं केवल मैं ही मरा हूं करोड़ों बार. जितनी बार, जो भी सैनिक भूशायी हुआ. कोई नहीं था. वह मैं ही था – कृष्ण

ये कलाकार थे मौजूद

नाटक में लगभग सभी कलाकारों ने बेहतर अदाकारी की. इसमें सुनिता भारती, नंदलाल सिंह, उमंग कुमार, रविशंकर, डॉ शंकर सुमन, मुहम्मद दानिश, सुजीत कुमार शर्मा, नीरज सिंह, मनीष कुमार, अरुणा सावली, प्रवीण कुमार, नीरज कुमार, नीतीश कुमार, अलका शर्मा मौजूद थीं. रूप सज्जा में अशोक घोष मौजूद दिखे. नाटक के सहायक निर्देशक रविशंकर थे.

2nd Show

Khamosh Adalat Jaree Hai / Vijay Tendulkar (खामोश, अदालत जारी है/विजय तेंडुलकर)
Played Leela Benare: The Protagonist

वासना के दंश से बेजान जिंदगी

'तुम्हें जीवित छोड़कर तुम्हारे गर्भ में पल रहे जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाए, ताकि तुम्हारे पाप कर्मों का मासूम भावी पीढ़ी के लिए गौरव न रहे।' जज के इस फैसले के रूप में बुधवार को ये पुरुष प्रधान सोच उभर कर सामने आई। कालिदास रंगालय में मौका था नाटक 'खामोश, अदालत जारी है' के मंचन का। शहर में पच्चीस साल बाद हुई इस प्रस्तुति को कला जागरण के कलाकारों ने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को समर्पित किया।

क्यों कुछ नाटकों का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। क्यों उन्हें दुनिया भर के लोगों से सराहना मिलती है। और क्यों कुछ नाटक हरेक काल में सार्थक होते हैं। ये सारी बातें विजय तेंदुलकर लिखित इस नाटक को देखकर सभी अपने आप ही समझ आ जाती हैं। नाटक के निर्देशक सुमन कुमार ने कहा कि इतने दिनों बाद इस नाटक की प्रस्तुति स्त्रियों को उसका हक दिलाने की एक कोशिश है।

उभरा स्त्री जीवन का दर्द

एक स्त्री के लिए अपने मन से फैसले लेना व उस पर अमल करना कितना मुश्किल होता है, यही इस नाटक के केंद्र में है। साथ ही एक स्त्री को केंद्र में रखकर नाटक पुरुष प्रधान सोच व स्त्री के लिए हीन भाव से ग्रसित समाज को भी प्रमुखता से उजागर करता है।

एक स्त्री की अपनी इच्छा ही किस तरह ही उसकी दुश्मन हो जाती है। बचपन में हो कहीं या मन में भी उसकी अस्मत पर खतरा मंडराता रहता है। वह किसी की वासना की शिकार होती है, फिर समाज की अदालतें चलती हैं। सुनवाई होती है और होती ही रहती है। स्त्री सिसकती रहती है, लेकिन फैसला कभी नहीं आता। नाटक की मुख्य पात्र लीला बेणारे भी ऐसी ही पात्र है जो समाज के अधिकांश स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है।

कालिदास रंगालय में नाटक 'खामोश! अदालत जारी है' का मंचन

कालिदास रंगालय में 'खामोश! अदालत जारी है' का मंचन करते कलाकार जागरण

संवादों में स्त्री मन की झलक

नाटक के अधिकांश संवादों से एक स्त्री का अंतर्मन झलकता प्रतीत होता है। 'यह बीसवीं शताब्दी के सुसंस्कृत मानव के अवशेष हैं। देखो ये चेहरे कितने जंगली लग रहे हैं। होंठों पर घिसे पिटे खूबसूरत औपचारिक शब्द हैं और भीतर है अतृप्त और विकृत वासनाएं।' ऐसे संवादों ने लोगों को अपने वास्तविक चेहरे से रूबरू कराया। 'यह शरीर मुझे चाहिए, मेरे बच्चे के लिए। उसे मां चाहिए, पिता का हकदार है वह। उसे घर चाहिए, संरक्षण चाहिए, प्रतिष्ठा चाहिए।' ऐसे संवादों में स्त्री की सामाजिक जिम्मेदारी भी झलकी।

ये रहे मंच के कलाकार

लीला बेणारे	सुनीता भारती
बालू रोकड़े	नीतीश कुमार
मिसेज काशीकर	अनुप्रिया
काशीकर	डॉ. शंकर सुमन
कर्णिक	चक्रपाणि पांडेय
सुखात्मे	एस रिज्वानुद्दीन
सामंत	वीर प्रसाद सिंह
पोंक्षे	पुष्कर दयाल
अन्य	आशीष राज, विकास कुमार

नेपथ्य के कलाकार

प्रवीण गांगुली, आदित्य राठौर, उपेंद्र कुमार, अरविंद कुमार, राजेश कुमार, सतीश कुमार, विनोद कुमार, मो. जहीम, दिव्या राणा, सुशील [illegible], रमेश मेहता, सुनीता भारती, गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, कुमार अनुपम, अरुण कुमार सिन्हा, पुलेश्वर कुमार, सुधा संतान, रमेश सिंह आदि नेपथ्य सहयोगी थे।

नाटक में समाज की खामियां उजागर

में मंचित हुआ।

पटना | कार्यालय संवाददाता

करीब 25 साल बाद पटना के रंगदर्शकों को 'खामोश अदालत जारी है' नाटक देखने को मिला। 25 साल पहले कला संगम ने मंचित किया था तो इस बार कला जागरण ने किया। उस समय सतीश आनंद का निर्देशन था, तो इस बार सुमन कुमार का। सामाजिक विद्रूपताओं की कलई खोलने वाला यह नाटक इस बार भी दर्शकों को बांधने में सफल रहा। विजय तेंदुलकर लिखित नाटक को कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवंत करने की भरपूर कोशिश की।

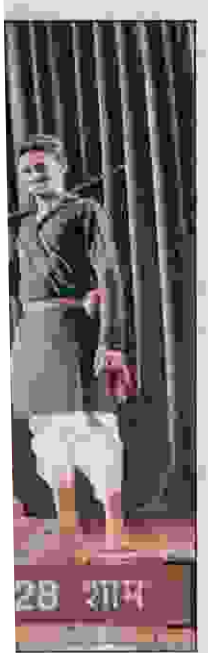

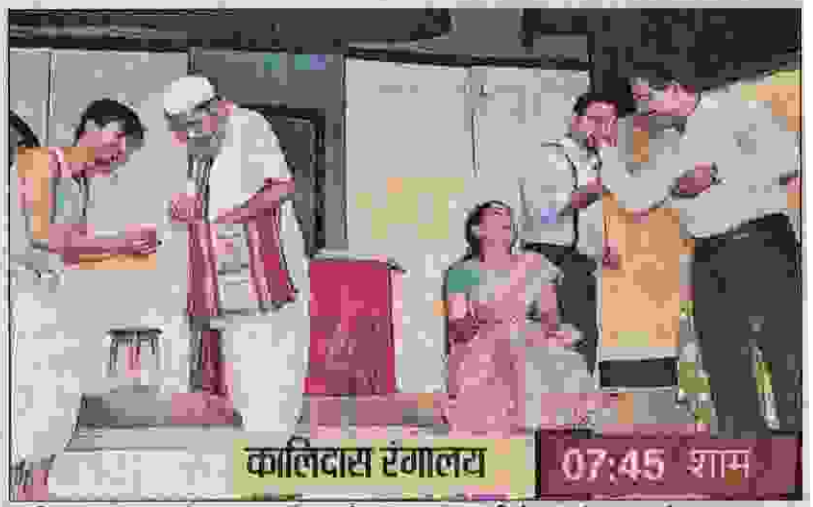

कालिदास रंगालय में बुधवार को खामोश अदालत जारी है का मंचन करते कलाकार।

अदालत का फैसला : एक स्त्री के साथ समाज के छल और मर्दाना यौन-कुंठा की एक प्रभावी तस्वीर नाटक में देखने को मिली। कैसे एक स्त्री को पहले बचपन के प्यार से धोखा मिला, फिर जवानी में बिन ब्याही मां बनने का दंश मिला और आखिर में कैसे अदालत उसके भ्रूण हत्या का आदेश देती है इसे कलाकारों ने मंच पर उतारा। सारा दोष स्त्री के माथे थोप दिया जाता है...। समाज की अदालत आज भी जारी है...खामोश अदालत जारी है...।

नाटक के कलाकार- सुनिता भारती, शंकर सुमन, एस रिज्वानुद्दीन, नितीश कुमार, चक्रपाणि पांडेय, वीर प्रसाद सिंह, पुष्कर दयाल, अनुप्रिया, कुमार विक्की और विकास कुमार।

Nagmandal / Girish Karnad (नागमंडल /गिरीश कर्नाड) Played 'Ranee', the Protagonist

गणेश स्तुति से किया। इसके बाद गतभाव, गत निकास, कविता आदि कलाकार अक्षरा सिंह मौजूद रहे।

पीड़ा • समाज में स्त्रियों को लंबे समय से दोयम दर्जे का बनाकर रखा गया

नाटक नागमंडल में नारी के शोषण की अंतहीन दास्तान

First Show.

KALIDAS

पटना • डीबी स्टार

समाज में स्त्रियों को लंबे समय से दोयम दर्जे का बनाकर रखा गया है। पुरुष लाख कुकर्म कर ले लेकिन स्त्रियों से हमेशा चरित्रवान होने की उम्मीद करता है। महिलाओं के चरित्र पर बात-बात में सवाल उठाए जाते रहे हैं। इन बातों को रविवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक नागमंडल में दिखाया गया। माध्यम फाउंडेशन की प्रस्तुति और गिरीश कर्नाड द्वारा लिखित इस नाटक की परिकल्पना और निर्देशन राकेश कुमार का था।

नाटक नागमंडल लोककथा पर आधारित था, इसके मूल में इच्छित रूप धारण करने वाले नाग की कहानी है। नाटक की मुख्य पात्र एक ऐसी स्त्री है जो नैतिकता नाम पर मानसिक यातना को झेलने को विवश है।

नाग स्त्री के पति का रूप धारण उससे शारीरिक संबंध स्थापित कर लेता है। नाटक में परपुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित होने से नारी की दुविधामयी स्थिति को दिखाया गया। वह अपने पति की उपेक्षा से आहत है। नाटक में धारित गर्भ के कानूनी और नैतिक पक्षों की पड़ताल भी दिखाई गई। नाटक में नाग को पुरुष के विकृत भावों का प्रतीक मानकर नारी के असहाय बोध और दांपत्य जीवन के अंतर्द्वंद्व को दिखाया गया।

कालिदास रंगालय में नाटक नागमंडल के मंचन के दौरान अभिनय करते कलाकार।

यह थे कलाकार

राहुल कुमार, सौरभ कुमार, संटू कुमार, शिवम कुमार, आदित्य राज सिंह, चित्रा श्रीवास्तव, सुनीता भारती, विवेक कुमार, विभा सिन्हा, गुंजन कुमार आदि।

प्रयास करना चाहिए, यह सपना ... आदि मौजूद थे.

'नागमंडल' से दिखी नारी संघर्ष की कथा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

पति से उपेक्षित एक औरत की भावनाओं को लेकर गिरीश कर्नाड द्वारा गढ़ा गया नाटक 'नागमंडल' रिश्तों के धरातल पर मायावी दुनिया को भी जीवंत करता है. यह रिश्तों, खास कर पति-पत्नी के संदर्भ में बुने गये ताने-बाने की कहानी है जिसे बड़े ही नाटकीय तरीके और साफगोई से बयां किया गया है. रविवार को माध्यम फाउंडेशन द्वारा कालिदास रंगालय में इसे पेश किया गया. राकेश कुमार द्वारा निर्देशित इस नाटक में एक ऐसी औरत की कहानी है, जिसका पति उसे पसंद नहीं करता और अपनी मालकिन के प्रेम में फंसा हुआ है. वह अपनी पत्नी से हमेशा मारपीट करता है. पड़ोस में रहने वाली एक अंधी औरत उसकी पत्नी को टोकती है. इसके बाद उसे पति को अपने वश में करने के लिए टोटके से सम्मोहित करने की जुगत बताती है, मगर वह फेल हो जाती है. इसके बाद उसे एक तरल पदार्थ देती है और उसे उबाल कर पिलाने को कहती है. औरत तरल पदार्थ को उबालती है, मगर वह जहर की तरह लगता है, और वह डर के कारण अपने पति को नहीं ...

गर्भवती हो जाती है मगर पति के इस दोहरे रूप से अनजान रहती है. जब वह गर्भवती होने की बात पति से बताती है तो वह उसे ताने देता है. पंचायत में उसे कसम खाने कहा जाता है, तब नाग की उसे कहता है अग्नि नहीं नाग को पकड़ कर कसम खाना. कसम खाते हुए वह बोलती है आज तक मैंने अपने पति और नाग के सिवाय किसी को स्पर्श नहीं किया. इसके बाद गांव के लोग इसे देवी का अवतार मान लेते हैं और गांव की रक्षा करने को कहते हैं.

निर्देशक राकेश कहते हैं कि पति बुरा होकर भी बुरा नहीं मगर औरत बुरी न होते हुए भी बुरी. आखिर क्यों? वह कहते हैं कि यह नाटक औरत के उसी द्वंद्व को लेकर बुना गया है जिसका संताप वह युगों से झेलती आ रही है. मंचन के जरिए समाज में नारी संघर्ष की कथा का वर्णन किया गया. नारियों पर होने वाले उत्पीड़न को दिखाया गया.

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार।

अस्तित्व की लड़ाई लड़ती सकीना

पटना. ... मोहल्ले के लड़के सकीना के हुस्न के दीवाने रहते हैं. उसकी मां की आंखें ... लड़के मंडराते हैं, तरह-तरह की बातें बनाते हैं, लेकिन

Play portrays condition of women in society

HT Correspondent
htpatna@hindustantimes.com

PATNA: The Bihar Art Theatre (BAT), one among the prominent theatre groups of the state capital, offered Patnaites a show based on work of veteran actor, director Girish Karnad at the Kalidas Rangalay here on Sunday.

Titled as 'Nagamandal', the play was adapted from a folk tale in Karnataka. It was a sensitive portrayal of the condition of women in our society and depicted their physical and psychological exploitation and their suppression through the story of Rani, the protagonist, who is blamed for extra marital affair and is punished and persecuted because of that.

Snakes in the play symbolised evil forces in the society while the woman represented innocence and simplicity and the two were juxtaposed in the play. Rakesh Kumar, the director, said the work was in fact the ground reality of our society. "It's a hard-hitting comment on the status of women. We selected this work because theatre is not only an entertainment, but also a platform to raise serious social issues," he said.

The play was presented under the banner of Madhyam Foundation. Sunita Bharti ably enacted the role of the protagonist while the others in the cast included Vivek Kumar in the role of Nagappa, Gunjan Kumar, Vibha Sinha, Rahul Kumar, Sourabh Kumar, Shivam Kumar, Chitra Shrivastav, Aditya Raj Singh and Santu Kumar.

While the dance direction was given by Om Prakash, music by Rakesh Kumar and light arrangement was made by Raj Kumar and Deepak Kumar.

Pradeep Ganguli, Kalidas Rangalay in-charge, said the place had kept offering a variety of plays for the last several weeks. "Patnaites have enjoyed here works like 'Kaase Kahun', the story of a woman and 'Vijay' based on the story of the great Magadh ruler, Emperor Ashok," he said.

---

www.inextlive.com/patna
Tiranga instills a feeling of pride in all of us and unifies every Indian irrespective of any differences.@MPNaveenJindal
5

जब इच्छाधारी नाग बन गया पति

PIC : I NEXT

औरतों के साथ ही ऐसा क्यों होता है...

चल... हट... मुझे अपना काम करने दे

तेरा यहां क्या काम...

कालिदास रंगालय में हुआ नाटक नागमंडल का मंचन

PATNA (31 Jan): माध्यम फाउंडेशन द्वारा रविवार को कालिदास रंगालय में नाटक नागमंडल का मंचन किया गया. नाटक का निर्देशन राकेश कुमार ने किया

नारी की दुविधामयी स्थिति

को प्रयास पटना के द्वारा रवीन्द्र भवन सभागार में नाटक मसीहाओं सलीना का मंचन किया गया. नाटक का निर्देशन मिथिलेश सिंह ने किया.

हक की लड़ाई लड़ती रही

नाटक 'नागमण्डल' में दिखा नारी शोषण का रूप

पटना (एसएनबी)। समाज में नारी का शोषण हर कदम पर हो रहा है। यही दृश्य रविवार को कालिदास रंगालय में देखने को मिला। मौका था माध्यम फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित नाटक 'नागमंडल' के मंचन का। नाटक के लेखक गिरीश कर्नाड हैं निर्देशन राकेश कुमार ने किया।

कथासार : नाटक का आधार लोककथा है। इसके मूल में इच्छित रूप धारण करने वाले नाग की संकल्पना है, जो भारतीय दंतकथाओं की लोकप्रिय कथावस्तु रही है। नाटक के माध्यम से नारी-शोषण का भी चित्रण किया गया। पति के रूप में किसी पर पुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित होने पर नारी की दुविधामयी स्थिति की कल्पना की गई है।

नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

परिणाम स्वरूप धारित गर्भ के कानूनी और नैतिक पक्ष की पड़ताल करने का प्रयास भी किया गया है। रानी जो कथा के मूल में है, अपने गर्भ का रहस्य नहीं जानती है। अपने मूल पति की उपेक्षा से आहत रानी कब एक मनुष्यरूपी नाग का गर्भ धारण कर लेती है यह रहस्य उसे भी पता नहीं चलता। नाटक नाग को पुरुष के विकृत भावों का प्रतीक मानकर नारी के असहाय बोध और संकुल जीवन के विविध अंतर्द्वंद्व को नाटकीय और तर्कसंगत चित्रण करता है।

कलाकार : राहुल कुमार, सौरभ कुमार, संतु कुमार, शिवम कुमार, आदित्य राज सिंह, चित्रा श्रीवास्तव, सुनीता भारती, विवेक कुमार, विभा सिन्हा, गुंजन कुमार, प्रेरणा सिन्हा, आर नरेन्द्र, अजय कुमार श्रीवास्तव, मनोज कुमार, फतेहउद्दीन, अमित कुमार, सुधीर कुमार, विकास कुमार आदि ने अभिनय किया।

Gora / Ravindranath Tagore (गोरा/रवीन्द्र नाथ ठाकुर) Played Sucharita : A Central Role

LKING ABOUT ········· PATNA TIMES, THE TIMES OF INDIA 3

Photos: Tahir Hadi

Bringing alive 19th century Bengal

The Madhyam Foundation recently staged a play based on Rabindranath Thakur's novel Gora at a city auditorium. The play, sponsored by the Union cultural ministry, was inaugurated by art, culture and youth department minister **Shiv Chandra Ram**.

Directed by **Dharmesh Mehta**, the play depicted the social, political and religious scenes of Bengal in the 19th century. The story revolved around the early days of Bengal when people were busy in self-searching, resolutions, conflicts and self-discovery.

The lead actors of the play, **Vivek Kumar** and Dharmesh Mehta (also the director), enthralled the audience with their strong performance. The theatre was packed capacity and theatre enthusiasts were engrossed in the play. **Shamita Mehra**, a school teacher who had come to watch the play, said, "I came with my family to enjoy this play because I think theatre always has something new to teach. The play was informative and educative as well. Children can benefit a lot by watching such plays." Adding to her, another member from the audience, **Sanjay Singh** said, "I really appreciate this play because a lot of people were not aware about what it showcased. The theme and storyline were quite different and interesting. My curiosity was intact throughout the play. It also had a great connect with the audience."

Talking about the best part of the play, **Sanju Jain** explained, "I liked the scene when it was disclosed that during the adverse situation in Bengal, Krishnadayal had to adopt Gora as his son. Since Gora belonged to a European nation, his spiritual ideologies were different from his father's. But this truth was hidden from Gora for very long."

— Swati.Savarn@timesgroup.com

Scenes (also above) from the play

पटना · पटना, शुक्रवार, 5 जनवरी, 2018 · 10

गोरा में दिखा... इंसान को धर्म में मत बांटो

पटना | रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यास गोरा पर आधारित नाटक का गुरुवार को लगातार दूसरे दिन कालिदास रंगालय में मंचन हुआ। धर्म के नाम पर तरह-तरह की सामाजिक बुराइयों को सही ठहराने की कोशिश की जाती है। धर्म में व्याप्त इन्हीं कुसंगतियों पर प्रहार करता यह नाटक लगातार दूसरे दिन अपने प्रयास में सफल दिखा। राजधानीवासियों को समाज में जाति और धर्म के नाम पर भेदभाव से दूर रहने को जागरूक करता और इंसान को इंसान मानकर उसे हिंदू, मुसलमान या जाति के आधार पर बांटने की बजाए मानवता दिखाने की अपील करता यह नाटक माध्यम फाउंडेशन की तरफ से लगातार दो दिन मंचित किया गया। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से मंचित इस नाटक का निर्देशन धर्मेश मेहता ने किया। नाटक के जरिए मेहता ने यह बताने की कोशिश की कि मनुष्य का मूल्यांकन उसके गुणों के आधार पर होना चाहिए ना कि उसकी जाति, धर्म और रंग के आधार पर।

ये रहे कलाकार- विशाल तिवारी, गुंजन कुमार, आर नरेंद्र, चित्रा श्रीवास्तव, विभा सिन्हा, विवेक कुमार, सरविंद कुमार, राकेश मेहता, सुनीता भारती, यूरेका किम, कुणाल सिकंद, अजय कुमार श्रीवास्तव, सुधीर कमल, रानू कुमार, डॉ विकास कुमार, अमित कुमार, मो. सद्रुद्दीन, रणधीर.फहीमुद्दीन, शोभा सिन्हा, सौरभ कुमार।

नाट्य रूपांतरण – विवेक कुमार और धर्मेश मेहता, मंच परिकल्पना और निर्देशन- धर्मेश मेहता

Minu / Ravindranath Tagore (मीनू / रवीन्द्रनाथ ठाकुर)
Played mother of protagonist

जागरण सिटी
पटना
पटना, 9 मई 2015

...खो गया मीनू का अल्हड़पन

कालिदास रंगालय में रवींद्र जयंती उत्सव शुरू, पहले दिन नाटक 'मीनू' का किया गया मंचन

'एक नटखट और कहीं नहीं प्रकृति [illegible] अल्हड़ और जंगल में दौड़ती हिरण की तरह दिखाई देती है। [illegible] के बाद भुलाए नहीं भूलते। [illegible] मीनू के अल्हड़पन को [illegible] करते हैं। एक लड़की जो दुनिया से बेखबर होती है। कालिदास रंगालय में शुक्रवार से शुरू हुए रवींद्र जयंती उत्सव में 'मीनू' नाटक का मंचन किया गया। बिहार आर्ट थियेटर द्वारा आयोजित इस उत्सव का विधिवत उद्घाटन राज्यसभा सांसद रवींद्र किशोर सिन्हा, [illegible] के प्रसिद्ध फोटो पत्रकार सत्यनारायण ने मिलकर किया। रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी समाप्ति पर आधारित इस नाटक का नाट्य रूपांतरण अरुण कुमार सिन्हा तथा निर्देशन अशोक घोष ने किया।

स्त्री मन का किया सजीव चित्रण

मीनू एक अल्हड़ लड़की है। इसे दुनिया की कोई परवाह नहीं। वह बड़ी हो गई है, फिर भी बच्चों के साथ खेलती है। उसकी शादी होती है, किंतु उसके स्वभाव में फिर भी कुछ भी बदलाव नहीं आता। [illegible] उसका पति उसे मायके छोड़ देता है। मीनू बदल जाती है। [illegible] उन्होंने मीनू के बचपन और जवानी [illegible] इसका बचपन [illegible] इस संवाद में इस बदलाव को सहज ही महसूस किया जा सकता है।

कालिदास रंगालय में मीनू नाटक के मंचन के दौरान बिहार आर्ट थियेटर के कलाकार। जागरण

नेपथ्य सहयोग भी रहा बेहतर

नाटक को नेपथ्य से भी बेहतर सहयोग प्राप्त हुआ। [illegible] कुमार की प्रकाश परिकल्पना [illegible] ने किया। [illegible] रूपसज्जा अरुण कुमार सिन्हा तथा [illegible] ने किया। इस अवसर पर कुमार अनुपम, [illegible] अशोक प्रियदर्शी, डॉ. [illegible] आदि भी उपस्थित थे।

अभिनय एवं निर्देशन ने जीता दिल

नाटक के अभिनय ने [illegible] निर्देशन का पक्ष भी उतना ही मजबूत दिखा। [illegible] मीनू के चरित्र [illegible] अपूर्व की मां की भूमिका में सुनीता भारती के अभिनय को भी दर्शकों ने काफी सराहा। [illegible] अभिषेक कुमार [illegible] ने भी अपने अभिनय से सबको प्रभावित किया।

रवीन्द्र जयंती पर 'मीनू' का मंचन

पटना (एसएनबी)। रवीन्द्र नाथ टैगोर की 154 वीं जयंती उत्सव पर कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर की ओर से उनकी कहानी 'समाप्ति' पर आधारित नाटक 'मीनू' का मंचन किया गया।

गांव की भोलीभाली नटखट मीनू हमेशा नन्हें लड़कों के संग ही रहती है। अपूर्व की मां की इच्छा नहीं होते हुए भी बेटे की पसंद के कारण मीनू से विवाह करना पड़ता है। विवाह के बाद भी मीनू में कोई परिवर्तन नहीं

■ कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति

आता जिसके कारण बार्ट में अनबन होती है। अपूर्व अपनी पत्नी मीनू को उसके मायके में छोड़ शहर चला जाता है। गांव में अपूर्व की मां और कलकत्ता में बेटा अपूर्व साथ रहने के बावजूद एकाकी महसूस कर रहे होते हैं वहीं मीनू भी अपने मायके में एकाकी हो जाती है। अचानक उसका बालपन मृत हो जाता है और वापस अपने ससुराल पहुंच जाती है। नाटक में मीनू का अभिनय शांति प्रिया, अपूर्व का दीपांकर शर्मा, अपूर्व की मां का सुनीता भारती, दयाल का आलोक गुप्ता, इंदु का अभिषेक कुमार, कमला का अलका शर्मा, राखाल का श्रेयस, पारस का नीतीश कुमार व वनमाली का अभिनय मुन्ना कुमार राय ने निभाया।

नाटक मीनू के एक दृश्य में कलाकार।

कविगुरु की 154वीं जयंती पर हुआ आयोजन

'बदनाम' ने दिया देश को एक रहने का संदेश

टैगोर की चर्चित रचनाओं में शामिल है 'बदनाम'

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

एक तरफ गति के लिए कर्तव्य पथ पर सहयोगी बनने की मजबूरी और दूसरी तरफ देश के प्रति अपने कर्तव्य का निवहन. इन दोनों के बीच में संतुलन बना कर भारतीय नारी के संकल्प शक्ति और चारित्रिक ऊंचाई की कहानी. रवींद्र परिषद् पटना के द्वारा रवींद्र भवन में आयोजित कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर के 154वीं जयंती समारोह में उनकी कृति 'बदनाम' का बखूबी मंचन किया गया. इस प्रस्तुति का नाट्य रुपांतर गणेश प्रसाद सिन्हा और परिकल्पना व निर्देशन सुमन कुमार ने किया. इस मौके पर रवींद्र परिषद् के सचिव प्रोभास रॉय, बिहार संगीत अकादमी के उपाध्यक्ष प्रदीप्तो मुखर्जी, नौशित कुमार बोस, शंकर गुहा समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे.

नाटक बदनाम का दृश्य

दिखी भारतीय नारी की संकल्प शक्ति

कहानी के अनुसार क्रांतिकारी अनिल अपने जमानत के शर्तों का उल्लंघन कर के पुलिस के पहुंच से बाहर हो जाता है. उसे पकड़ने के लिए ब्रिटिश शासन का इंस्पेक्टर विजय चक्रवर्ती अपनी हर कोशिश करता है लेकिन अनिल उसके पकड़ में नहीं आता है. इंस्पेक्टर विजय को यह जानकारी मिलती है कि अनिल को किसी संभ्रांत महिला का वरदस्त प्राप्त है और उसी के द्वारा उसे सारी सूचनाएं मिल जाती है. इंस्पेक्टर विजय अपनी पत्नी सौदामिनी उर्फ सद्दू से कहता है कि वह उस महिला के बारे में जानकारी एकत्र करने में सहयोग करे तब सद्दू अपने पति से वादा करती है कि वह शिवालय में अनिल और उसके सहयोगी को गिरफ्तार करा देगी. तय समय पर इंस्पेक्टर शिवालय पहुंचता है और यह जानकर स्तब्ध रह जाता है कि अनिल को सहयोग करने वाली महिला कोई और नहीं बल्कि खुद उसकी पत्नी सद्दू है. यह जानते हुए भी कि वह समाज में बदनाम होगी, सौदामिनी देश के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए अपने पति के कर्तव्य पथ पर सहयोगी बनती है.

इस प्रस्तुति में सौदामिनी के रुप में उज्जवला गांगुली, इंस्पेक्टर विजय के रुप में चक्रपाणी पांडेय और अनिल के रुप में उदित कुमार ने तो वहीं मासी मां के रोल में सुनिता भारती के साथ अलग अलग रोल में उमाशंकर, नीरज कुमार, मुन्ना कुमार राय, मो.नज्मुद्दीन समेत अन्य कलाकारों ने भी बखूबी अपने अभिनय प्रतिभा का प्रदर्शन किया.

रवींद्र संगीत के कार्यक्रम में झूम उठे दर्शक

- कालिदास रंगालय में हुआ आयोजन
- गायन और नृत्य का हुआ अनोखा संगम

पटना. रवींद्र जयंती के अवसर पर कालिदास रंगालय में 'पथ' विषय पर आधारित रवींद्र संगीत और नृत्य का अनुष्ठान किया गया. इसमें कई कलाकारों ने अपनी-अपनी प्रतिभा के द्वारा लोगों का मन मोह लिया. इसका आयोजन 'संचारी' की तरफ से किया गया. इस मौके पर 'कर्ण-कुंती-संवाद' कविता पाठ का आयोजन हुआ. आलेख्य रचना डॉक्टर रात्रि राय और आलेख्य पाठ श्रुति सेनगुप्ता ने किया.

कालिदास रंगालय में रवींद्र संगीत पर नृत्य करते कलाकार.

गायन-नृत्य से झंकृत हुआ रंगालय: रवींद्र जयंती के अवसर पर आयोजित हुए इस आयोजन में गौतम राय चौधरी, सनातन मुखर्जी, शर्बरी राय, कस्तूरी दासगुप्ता, सुतपा सांजरा, सुलग्ना मुखर्जी और मैत्रेयी बनर्जी ने जहां गायन की प्रस्तुति दी वहीं नेहा बनर्जी, सृष्टि पॉल, अंबिका, नीलांजना बनर्जी, सोमा सरकार, रेनेसा दास, स्वास्तिका मंडल, देवोजित भट्टाचार्य और अर्कदीप बनर्जी ने नृत्य प्रस्तुत किया. इस दौरान तबले पर सुमन्तो दासगुप्ता और सिन्थेसाइजर पर शिवम ने साथ दिया. नृत्य की परिकल्पना तापसी चक्रवर्ती और सुतापा ने किया.

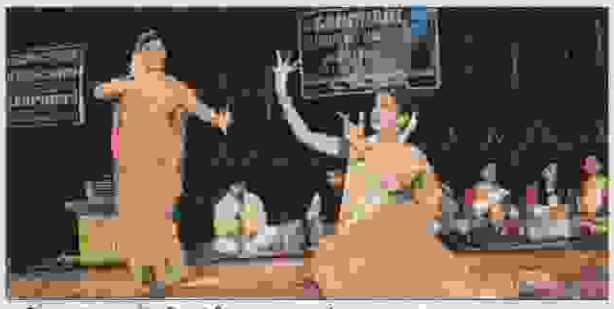

Kadambini / Ravindranath Tagore (कादम्बिनी/रवीन्द्रनाथ ठाकुर)
Played Kadambini: the Protagonist

2 Shows

यहां जीवित होने का देना पड़ता है सबूत

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखित कहानी कादंबिनी काफी चर्चित कहानी है. इसमें यह बताया गया है कि एक अकेले इनसान द्वारा कही बातों का कोई विश्वास नहीं करता है, चाहे वह अपने जीवित होने का प्रमाण ही क्यों न दे. कालिदास रंगालय में बुधवार से शुरू हुए उत्सव मौसम 2014 के पहले दिन इसी नाटक का मंचन हुआ. यूं तो यह नाटक पहले भी हो चुका है, लेकिन इस बार कुछ अलग कलाकारों ने नाटक में अभिनय किया. बिहार आर्ट थियेटर के चार कलाकारों को छोड़ सभी कलाकार नये थे. नाटक का निर्देशन अशोक कुमार घोष ने किया. दर्शकों ने 20 रुपये का टिकट लेकर नाटक देखा.

नाटक मंचन

यह थी कहानी

कादंबिनी एक जमींदार परिवार की विधवा बहू रहती है. वह अचानक एक दिन बेहोश हो जाती है. बेहोश कादंबिनी को मरा हुआ समझ कर जमींदार शारदा शंकर रातों-रात उसका दाह-संस्कार कराने के लिए अपने आदमियों के हाथों उसके शरीर को शमशान घाट भिजवा देता है. कादंबिनी का कोई नहीं होता है, फिर भी शारदा उसका दाह-संस्कार खुद नहीं करता है. वह सोचता है कि कहीं लोगों को शक न हो जाये कि उसकी हत्या कर दी गयी है. शमशान घाट पर लाश के रूप में लायी गयी बेहोश कादंबिनी को होश आ जाता है. लोग उसे भूत समझने लगते हैं. कादंबिनी खुद को जीवित समझाने के लिए काफी ज्यादा कोशिश करती है. लेकिन वह नाकाम रहती है. अंत में वह नदी में कूद कर अपने प्राण त्याग देती है. इसके बाद लोगों को समझ आता है कि वह भूत नहीं थी. इस नाटक में सुनीता भारती, आलोक गुप्ता, कनिज फातिमा, शांतनु, निक्की सिंह, राजू सिंह, रंजन कुमार, राजेश कुमार सिन्हा, नीतिश कुमार, प्रवीण कुमार आदि ने अभिनय किया.

DB स्टार • PATNA

जान देकर देना पड़ा जिंदा होने का सबूत

PIC | NEXT

दिलचस्प प्रस्तुति

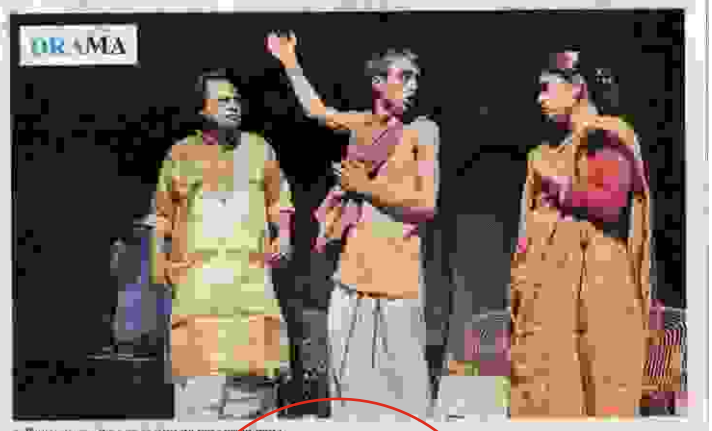

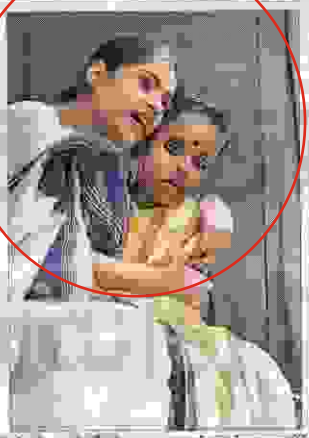

रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी कादम्बिनी को अरुण कुमार सिन्हा ने कालिदास के रंगालय में इस कदर पेश किया कि दर्शक देखकर दंग रह गए. बेहतर अभिनय पेश कर दिल जीत लिया.

Kanchanrang / Shambhu Mitra (कांचनरंग/शम्भू मित्र)
Played Tarala: The Central Character

जब लगती है पांचू की लौटरी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

बंगाल के लेखक नाटककार शंभू मित्र एवं अमित मित्र लिखित नाटक 'कांचनरंग' का मतलब होता है सोने का रंग. कालिदास रंगालय में बुधवार को प्रस्तुत नाटक हास्य शैली में दिखाया गया. इसमें दिखाया गया कि सोने (धन) का लालच आदमी को किस प्रकार खुद के विवेक से भटका देता है.

नाटक मंचन

नाटक का मुख्य किरदार पांचू एक सीधा-साधा मंदबुद्धि इनसान है. एक निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार के मुखिया यदु गोपाल बाबू के घर में वह रहता है. यदु गोपाल के दो बेटे हैं अमर और समर. दोनों ही फैशनपरस्त और बेकार होते हैं. एक बेटी है सीमा, जो किसी मिलन नाम के लड़के के प्रेम में है. यदु गोपाल बाबू दूर के रिश्ते से पांचू के मौसा लगते हैं और पांचू को गांव से इसलिए ले आये हैं कि बगैर पगार के रुखी-सूखी खाकर घर का सारा काम काज करे.

नाटक में हर सीन के साथ चलनेवाला म्यूजिक नाटक को काफी बेहतरीन बना देता है. पांचू का किरदार कर रहे अशोक घोष की एक्टिंग काफी सराहनीय थी. उनकी मंदबुद्धि के एक्टिंग पर अंत तक तालियां बजती रहीं.

कहानी में उस वक्त मोड़ आता है, जब पांचू को सवा लाख रुपये की लॉटरी मिलती है. परिवार का हर सदस्य उससे अपनापन जताने लगता है और उसके लॉटरी के रकम से अपने सपनों को साकार करने की कोशिश में लग जाता है. यहां तक कि पांचू को घर का दामाद बनाने का भी फैसला ले लिया जाता है. इधर पांचू का भी मिजाज सातवें आसमान पर होता है, लेकिन तभी खबर आती है कि लॉटरी पांचू को नहीं मिली. फिर क्या था, परिवार के सभी सदस्य गिरगिट से भी जल्दी अपना रंग बदल लेते हैं. पांचू को उसकी औकात बता कर लात-जूते से उसकी खबर लेना शुरू कर देते हैं. ठीक उसी वक्त अचानक टेलीग्राम आता है कि लॉटरी का विजेता पांचू ही है. पहली खबर गलत थी. उस वक्त घर वालों को सांप सूंघ जाता है.

नाटक में सभी को सबसे ज्यादा पांचू का किरदार पसंद आया.

पात्र-परिचय

पांचू : अशोक घोष ▪ यदु गोपाल बाबू (गृहस्वामी) : उमेश कुमार ▪ गृहस्वामिनी : सविता श्रीवास्तव ▪ तरला : सुनीता भारती ▪ सीमा : उज्ज्वला गांगुली ▪ महिला (किरायेदार) : चंदना घोष ▪ बद्रू : सुनील ▪ चितो बाबू : उमंग ▪ अमर : आशीष राज ▪ समर : धीरज कुमार ▪ फिल्म डायरेक्टर : अजय श्रीवास्तव

मंच पर आये नये नाटक

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शहर में नाटकों का मंचन मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन है. नाटक अगर अच्छे हो, तो पूरा हॉल भर जाता है. पिछले कुछ सालों से एक ही नाटक का मंचन लगातार किया जा रहा था. प्रभात खबर ने एक नाटक को बार-बार दोहराये जाने पर 27 दिसंबर के अंक में 'लोग पुराने नाटकों से बोर हो चुके हैं' शीर्षक से खबर प्रकाशित की थी. इस खबर को पढ़ने के बाद सोशल मीडिया में रंगमंच से जुड़े लोगों व कला प्रेमियों ने इस मुद्दे पर चर्चा की. कई ने इस बात को स्वीकारा कि नये नाटक भी होने चाहिए, ताकि दर्शक बोर न हों. प्रभात खबर की खबर का असर अब पटना में नजर आ रहा है. पिछले कुछ दिनों में कई नये नाटकों का मंचन हुआ है. नये नाटकों को देख रहे लोगों ने प्रभात खबर को धन्यवाद कहा और सभी नाटकों की तारीफ भी की.

लाइफ इंपैक्ट

बिहार आर्ट थियेटर एवं कालिदास रंगालय के संस्थापक नाट्यकार, निर्देशक, स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय अनिल कुमार मुखर्जी की 94वीं जयंती के अवसर पर आयोजित 23वां पटना थियेटर फेस्टिवल के आयोजन का सोमवार को आखिरी दिन था. आखिरी दिन नाटक भामा शाह का मंचन किया गया. लेखक छोटू नारायण सिंह ने महाराणा प्रताप की कहानी को नाट्य लेख रूप दिया. वहीं निर्देशक उपेन्द्र कुमार ने कलाकारों से काफी अच्छी अदाकारी करवायी. नाटक हल्दी घाटी की लड़ाई के बाद की कहानी को मंच पर दिखाता है. जिस लड़ाई के बाद महाराणा प्रताप को अरावली के जंगलों में शरण लेनी पड़ी थी. इसके बाद भी वे अकबर से हार नहीं माने थे और मुगलों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध करते रहे. नाटक में सतवीर कुमार, स्नेहा रानी, राजू सिंह, उदय कुमार सिंह, सुनीता भारती, कुमार सोनू शंकर, अभिषेक कुमार ने बेहतरीन एक्टिंग की.

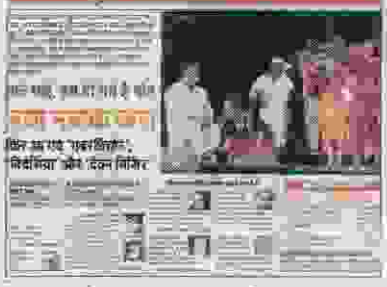

प्रकाशित खबर

खबर के बाद हुए नये नाटक

■ 1 जनवरी : अंधेर नगरी, दरोगा जी चोरी हो गयी, विरोध ■ 4 जनवरी : गड्ढा (अभियान संस्कृति मंच) ■ 6 जनवरी : पोलटीस (प्रेरणा संस्था) ■ 12 जनवरी : धरती आबा (निर्माण कला मंच) ■ 12 जनवरी : डाक घर (बिहार आर्ट थियेटर) ■ 14 जनवरी : दो हाथ (बिहार आर्ट थिएटर)

मंच पर इन दिनों हुए नये नाटक

■ 15 जनवरी : मास्क (मॉडर्न माइम सेंटर) ■ 15 जनवरी: जानेमन (एचएमटी) ■ 16 जनवरी : साउंड ऑफ वूमेन (सरगम आर्ट्स) ■ 16 जनवरी : अधिष्ठाता (चेतना समिति) ■ 17 जनवरी : जूता का आविष्कार (कृष्णायण) ■ 18 जनवरी : अंधा मानव (श्री गणेश कला संस्थान) ■ 18 जनवरी: जो लौट नहीं सकते (आर्ट एंड आर्टिस्टको) ■ 19 जनवरी : सुपनवा का सपना (इप्टा, मधेपुरा) 20 जनवरी - भामा-शाह (बिहार नाट्यकला प्रशिक्षणालय)

नये नाटक देखने को मिलता है, तो एक एक्साइटमेंट होता है कि अब आगे क्या होगा. इस सीन के बाद क्या सीन होगा

■ शिवाशीष मुखर्जी, धानपुर

पुराने नाटक में कोई क्यूरिसिटी नहीं रहती है, पहले से पता होता है कि इसके बाद ऐसा होगा और उसके बाद ऐसा होगा. देखने में बिलकुल भी मजा नहीं आता है.

■ मुक्ताली मुखर्जी

पुराने नाटक टाइम पास होते थे. लेकिन इधर नये नाटक देखने के लिए टाइम निकलना पड़ता है क्योंकि उनमें लोगों का इंट्रेस्ट जाग जाता है. उसमें कलाकार भी नये-नये किरदार में नजर आते हैं.

■ पिंटू

फेस्टिवल के आखिरी दिन भामाशाह की दानशीलता मंच पर

पटना | कार्यालय संवाददाता

[illegible]

भामाशाह की त्यागशीलता

[illegible]

संजय सहाय और नूतन आनंद को सम्मान

[illegible] कई लोग उपस्थित थे।

Gharjamai / Premchand (घरजमाई/प्रेमचंद)

Played mother of protagonist

'घरजमाई' ने खूब किया मनोरंजन

पटना | कार्यालय संवाददाता

मेहरारू नहीं ब्लडप्रेशर की दुकान थी...चपक कर चलती थी...झमक कर बोलती थी...खखुआती थी, झंझुआती थी अउर बबुआ बेचारे माथा पीटते रह जाते थे...ज्यादा चांव-चांव करते थे तो सास, ससुर भी हहुआ के टूट पड़ती थीं...अउर बबुआ बेचारा पाहुना बन कर रह जाते थे...यह सब देख दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो रहे थे। कालिदास रंगालय में 'घरजमाई' नाटक ने लोगों का खूब मनोरंजन किया।

प्रेमचंद जयंती पर प्रेमचंद लिखित कहानी को बैट के कलाकारों ने गुरुवार को भोजपुरी में मंचित किया। अरुण कुमार सिन्हा के निर्देशन में कलाकारों ने अपने अभिनय से आखिर तक दर्शकों को बांधे रखा।

प्रयोग नहीं कहानी पर जोर

बैट यानी बिहार आर्ट थियेटर कहानी प्रधान नाटकों की प्रस्तुति के लिए जाना जाता है और गुरुवार को भी ऐसा ही दिखा। नाटक में पूरा जोर कहानी पर था। न तो लाइट-साउंड के लेकर कोई प्रयोग था और न ही मंच को लेकर। पर नाटक दर्शकों को बांधने में सफल रहा। गंवई संस्कृति कैसी होती है और गांव के लोग कैसे बतियाते हैं, घरजमाई बना युवक कैसे ससुराल में उपेक्षित होता है और आखिर में कैसे अपने गांव लौट आता है, इसको बड़े ही सधे हुए अंदाज में मंच पर उतारा गया। शुक्रवार को ईदगाह नाटक का मंचन होगा।

रंग प्रदर्शन... बैट के कलाकारों ने प्रेमचंद की कृति घरजमाई का दृश्य।

इनका रहा शानदार अभिनय

रविभूषण- हरिधन (घरजमाई), अनीता कुमारी- गुमानी (हरिधन की पत्नी), उज्ज्वला गांगुली (सास), अरविंद कुमार, अनीता कुमारी वर्मा, सुनीता भारती, रानू, अभिषेक, सुदीप, उमेश, अमित, दीपक, सिद्धिश्री, फातिमा, आसिफ इकबाल, रंजन, मदन, शांतिप्रिया, प्रवीण, सुजीत, शानु और अरुण।

आज

पटना महानगर

मुंशी प्रेमचंद की रचना समुद्र के समान : मंत्री

प्रेमचंद रंगशाला में जयंती पर कफन का मंचन

प्रेमचंद के बहाने 'घरजमाई'

प्रेमचंद के बिना हिन्दी साहित्य गरीब : रामवचन

Sadgati / Premchand (सद्गति/प्रेमचंद) Played Daughter of Protagonist

कालिदास रंगालय में प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाटक 'सद्गति' की हुई प्रस्तुति।

पंडितजी शादी का मुहूर्त कब निकालेंगे...

पटना | वरीय संवाददाता

पंडितजी हमारी बेटी की शादी करनी है। आपसे बड़ा पंडित कौन है यहां। पंडितजी हमरी बेटी की शादी के लिए आप बढ़िया से बढ़िया मुहूर्त निकाल दीजिए ना। आप मुहूर्त निकालिएगा तो हमर बेटी शादी के बाद खूब सुखी रहेगी। हां-हां दुखिया जरूर निकालेंगे। पर पहले जरा इ काम सब तो निबटा लो।

कालिदास रंगालय में गुरुवार की शाम यह संवाद पंडित घासीराम व दुखिया के बीच चल रहा था। मुंशी प्रेमचंद की चर्चित कहानी 'सद्गति' पर आधारित नाटक का मंचन हो रहा था। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर बिहार आर्ट थियेटर की ओर से आयोजित दो दिवसीय नाट्य समारोह इस नाटक के मंचन के साथ संपन्न हुआ। शाम 7 बजे हॉल दर्शकों से भर चुका था। प्रेमचंद की कहानी होने के कारण दर्शकों में नाटक को लेकर काफी उत्साह दिखा। हर बेहतरीन संवाद पर हॉल तालियों से गूंज रहा था। पर्दा उठने के बाद मंच पर पं. घासीराम के घर का दृश्य नजर आया। गांव का दलित दुखिया पंडित के घर पहुंचता है। वह उनसे अपनी बेटी की खातिर मुहूर्त निकालने को कह रहा था। पंडितजी इसकी मजबूरी का खूब फायदा उठाते हैं। दिनभर उससे बेगार करवाते। दुखिया सद्गति को लालायित था। उसकी इच्छा अगले जन्म में ऊंची जाति में पैदा होने की थी। लेकिन भूखे-प्यासे बेगारी करते हुए एक दिन उसके प्राण निकल गए। पंडित की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी अरुण कुमार सिन्हा ने दर्शकों को काफी प्रभावित किया।

नाटक का मंचन

- दो दिवसीय नाट्य उत्सव का समापन
- कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थिएटर का आयोजन

रंगमंच

नाटक: सद्गति

लेखक : प्रेमचंद
नाट्यरूपांतरण : अरुण कुमार सिन्हा
निर्देशक : अजीत गांगुली
प्रकाश : राजकुमार, ध्वनि : उपेन्द्र कुमार, रूपसज्जा : सुनील कुमार
प्रस्तुति प्रभारी : प्रदीप गांगुली

पात्र-परिचय

पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा
पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव
दुखिया : मो. आसिफ इकबाल,
दुखिया की बेटी : सुनीता भारती,
चिखुरी : उमेश कुमार

1 अगस्त दै० हिन्दुस्तान, पटना

बढ़िया मुहूर्त निकलवाने को बेगारी करता था दुखिया

पटना | वरीय संवाददाता

शिक्षक दिवस पर नाट्य शिक्षक स्व. अजीत गांगुली की स्मृति में बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति 'सद्गति' नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थिएटर की ओर से स्व. अजीत गांगुली की स्मृति में शिक्षक दिवस के अवसर पर गुरुवार को हिन्दी नाटक 'सद्गति' का मंचन हुआ। बिहार आर्ट थिएटर की यह प्रस्तुति मुंशी प्रेमचंद की रचना पर आधारित थी। पिछले माह भी इस नाटक का मंचन यहां हुआ था।

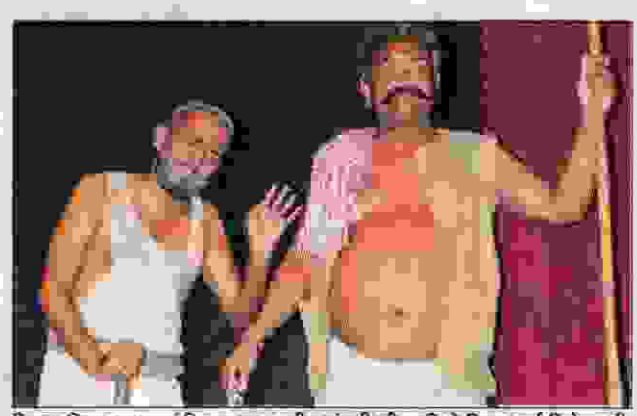

नाटक शुरू होता है और मंच पर दुखिया नजर आता है। वह पंडित घासी राम के घर के बाहर खड़ा था। वह उनसे अपनी बेटी की खातिर मुहूर्त निकालने को कह रहा था। पंडितजी हमारी बेटी की शादी करनी है। आपसे बड़ा पंडित कौन है यहां। हमरी बेटी की शादी के लिए बढ़िया मुहूर्त निकाल दीजिए। हां-हां दुखिया निकालेंगे। पर पहले जरा इ काम सब तो निबटा लो। पंडितजी इसकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। दिनभर उससे बेगार करवाते। दुखिया सद्गति को लालायित था। उसकी इच्छा अगले जन्म में ऊंची जाति में पैदा होने की थी। लेकिन बेगारी करते हुए उसके प्राण निकल गए।

रंगमंच

नाटक : सद्गति

लेखक : प्रेमचंद
नाट्यरूपांतरण : अरुण कुमार सिन्हा
निर्देशक : स्व.अजीत गांगुली
प्रकाश : राजकुमार, ध्वनि : उपेन्द्र कुमार, रूपसज्जा : सुनील कुमार
प्रस्तुति प्रभारी : प्रदीप गांगुली

पात्र-परिचय

पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा, पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव,
दुखिया : मो. आसिफ इकबाल,
दुखिया की बेटी : सुनीता भारती,
चिखुरी : उमेश कुमार

अंधविश्वास ने ले ली गरीब दुखिया की जान

लाइफ रिपोर्टर | पटना

नाटक मंचन

मुंशी प्रेमचंद ने अंधविश्वास से जुड़ी कई कहानियां लिखी हैं. उन्हीं में एक कहानी है 'सद्गति'. जिसका मंचन गुरुवार को कालिदास रंगालय में किया गया. नाटक में दिखाया गया है कि पुराने जमाने के लोग जब शादी का मुहूर्त निकालने ब्राह्मण के पास जाते थे, तो बदले में उन्हें काम करना पड़ता था.

अक्सर छोटी जाति के लोगों को ऊंची जाति के लोग परेशान किया करते थे.

पंडिताइन अपने पति को समझाती हुई कि मजबूर का फायदा उठा रहे हैं.

कलाकार :
■ पंडित घासीराम : अरुण कुमार सिन्हा ■ पंडिताइन : सविता श्रीवास्तव ■ दुखिया : आसिफ इकबाल ■ चिखुरी : उमेश कुमार ■ बेटी : सुनीता भारती.

इस मार्मिक नाटक का निर्देशन स्वर्गीय अजीत गांगुली ने किया था. नाटक के प्रस्तुति प्रभारी प्रदीप गांगुली और नाट्यरूपांतर अरुण कुमार सिन्हा थे.

सद्गति नाटक एक चमार जाति के दुखिया पर केंद्रित है, जो अपनी बेटी की शादी का मुहूर्त निकलवाने के लिए पंडित के घर जाता है. बदले में शातिर पंडित [illegible] कि वह उसके घर का सारा काम कर दे. दुखिया घर का सारा काम करना शुरू कर देता है. [illegible] पंडित की [illegible] लकड़ी [illegible] मुहूर्त नहीं निकालने [illegible] दुखिया लकड़ी [illegible] भूख प्यास [illegible] उसकी मृत्यु हो जाती है और पंडित उसे खेत में ले जा कर फेंक देता है.

Vadh-Sthal Se Chhalang/Hrishikesh Sulabh (वध-स्थल से छलांग)/हृषिकेश सुलभ

Played Achala: Narrator & A Central Charactor

दैनिक जागरण

जागरण सिटी

हलचल

मरा नहीं है अभी, वह लौट सकता है...

First Shows

'बीच चौराहे पर एक लड़की के कपड़े खोलने वाले गुंडे, जिसके इशारे पर आए थे। मैंने पूरी साक्ष्य के साथ उसका पता लगा लिया है।' ये कहता है एक पत्रकार, लेकिन आगे क्या होता है? 'पत्रकारिता के सच और कविता के झूठ में बहुत फर्क होता है।' इस संवाद ने बहुत कुछ बयां कर दिया। शुक्रवार की शाम कालिदास रंगालय में मौका था नाटक 'वध स्थल से छलांग' की प्रस्तुति का। कला जागरण के कलाकारों ने दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी। हृषिकेश सुलभ की कहानी 'वध स्थल से छलांग' का नाट्य रूपांतरण कन्हैया ने किया था। निर्देशन सुमन कुमार ने किया।

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन

मूल्यों को बचाने की कहानी

पत्रकारिता के बदलते सरोकारों को केंद्र में रखकर इस नाटक की रचना की गई है। पत्रकारिता के व्यवसायीकरण में एक आदर्शवादी व्यक्तित्व का इंसान किस तरह पिसता है। नाटक का मुख्य पात्र भी अपने मिटते आदर्शों को बचाने के लिए पत्रकारिता छोड़ देता है।

मंच के कलाकार

अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, नागेन्द्र कुमार, सुनिता भारती, डॉ शंकर सुमन, नितीश कुमार, अनुप्रिया, ऋषिकांत चतुर्वेदी, सुनील कुमार भगत, सूरज लाल, आमिर हक, रूपेश कुमार, राहुल उपाध्याय, [illegible], सुधीर कमल, नीरज [illegible], कुमारी [illegible], सोनाली सरकार, कुमार [illegible], अभिजीत कुमार पाठक, [illegible] व [illegible]।

नाटक वधस्थल से छलांग ने उठाए मानवीय संवेदनाओं पर सवाल

DRAMA

[illegible]

Scenes From the 1st Show

Vadh-Sthal Se Chhalang/Hrishikesh Sulabh (वध-स्थल से छलांग)/हृषिकेश सुलभ
Played Achala: Narrator & A Central Charactor

Second Show

पत्रकारिता के मकसद पर सवाल

कालिदास रंगालय में नाटक 'वध स्थल से छलांग' का मंचन करते कलाकार।

कला जागरण की ओर से 'वध स्थल से छलांग' नाटक का मंचन रविवार को कालिदास रंगालय में किया गया। हृषिकेश सुलभ की कहानी का नाट्य रूपांतरण कन्हैया ने किया है। नाटक में बताया गया है कि पत्रकारिता जब शुद्ध व्यवसाय बन जाती है, तब वह पत्रकारिता नहीं रह जाती है। नाटक का निर्देशन सुमन कुमार ने किया।

नाटक की कहानी

सवेरा टाइम्स का संपादक पूंजीपतियों और पूर्व सत्तासीन दबंगों का प्रतिनिधि बन कर आता है और स्थापित परंपरा को खत्म कर देता है। इससे अपने लोगों के लिए वह अखबार का इस्तेमाल कर सके। समाज के दबे कुचले लोगों के लिए रामप्रकाश आवाज उठाते हैं, पर उन्हें संपादक के कहर का शिकार होना पड़ता है। एक लड़की को उसके बूढ़े बाप के सामने नंगा किया जाता है, जिससे वो अपनी जमीन को दबंगों को बेच सके। शहर की तीन लड़कियों का अपहरण भी नेताओं के लिए किया जाता है। संपादक ऐसी खबरों को छापने से इंकार कर देता है। अंत में संपादक बदल जाता है। खुश हो जाते हैं। इस प्रकार लोगों की जीत होती है।

नाटक में संपादक का अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, सूर्यनारायण का डॉ. शंकर सुमन, रामप्रकाश का सरबिंद कुमार, बूढ़ा का मिथलेश कुमार, नंगमा की भूमिका में विभा सिन्हा व अन्य कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंच परिकल्पना प्रदीप गांगुली, रूप सज्जा विनय कुमार और प्रकाश परिकल्पना राजकुमार शर्मा की थी।

लाइव फटाफट

रविवार को 'वधस्थल से छलांग' नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

सच की पड़ताल में झेलनी पड़ी यंत्रणा

पटना। सच की पड़ताल में एक कलमकार राम प्रकाश तिवारी को यंत्रणा का शिकार होना पड़ता है। उसकी नौकरी भी जाती रही। अखबार ने उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया। यह कहानी हिन्दी नाटक 'वधस्थल से छलांग' की है। कला जागरण की ओर से सुमन कुमार के निर्देशन में रविवार की शाम कालिदास रंगालय में इसका मंचन किया गया। नाटक में पत्रकारिता के क्षेत्र में आए अवमूल्यनों पर रोशनी डाली गयी है। इसमें संपादक की भूमिका में अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, रामप्रकाश तिवारी के किरदार में सरबिंद कुमार, सूर्यनारायण की भूमिका शंकर सुमन ने निभायी है। अन्य किरदारों में नीतीश कुमार, सुनीता भारती, रूबी खातून, मिथिलेश सिन्हा, सुधीर कमल, विभा सिन्हा हैं।

ईमानदार कलमकार का भ्रष्ट तंत्र में लगानी पड़ती है छलांग

कालिदास रंगालय में नाटक वध स्थल से छलांग का मंचन।

पटना • डीबी स्टार

नाटक वध स्थल से छलांग पत्रकारिता के भ्रष्ट तंत्र में एक ईमानदार कलमकार की यंत्रणा को मुखर करता है। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, एक बेहतर समाज के निर्माण में पत्रकार दिन रात-मेहनत करते हैं। लेकिन पैसे के मोह में जनतंत्र के इस स्तम्भ में भी अब कई खामियां आ चुकी हैं। पत्रकारिता अपने मूल उद्देश्य से भटकता जा रहा है। रविवार को नाट्य संस्था कला जागरण के कलाकारों ने कालिदास रंगालय में नाटक वध स्थल से छलांग का मंचन किया। हृषिकेश सुलभ लिखित कहानी का निर्देशन किया सुमन कुमार। नाटक की कहानी ऐसे पत्रकार रामप्रकाश तिवारी के इर्द-गिर्द घूमती है जो समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों के दुख-दर्द को उठाता है। एक महिलाओं और कमजोर तबके पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलंद करता है लेकिन राजनेता, पूंजीपति और अपराधी उसकी आवाज दबा देते हैं।

ये थे कलाकार

डॉ. शंकर सुमन, मिथिलेश कुमार सिन्हा, [illegible], सुधीर कमल, विभा सिन्हा, सुनीता भारती, रूबी खातून, [illegible] उपाध्याय, [illegible] कुमार [illegible]।

Kabira Khada Bajar Me / Bhishma Sahani (कबीरा खड़ा बजार में/भीष्म साहनी)

Played Mother of Protagonist

कालिदास रंगालय में 'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक की प्रस्तुति

न धर्म और न ही जात है कबीरा की

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

झीनी झीनी बीनी चदरिया, काहे
का ताना, काहे की भरनी
कौन तार से बीनी चदरिया
इंगला-पिंगला ताना भरनी
सुखमन तार से बीनी चदरिया
सुर-नर-मुनि सब ने ओढ़ी
ओढ़ के मैली कीनी चदरिया
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों
की त्यों रख दीनी चदरिया

लेखक भीष्म साहनी द्वारा लिखित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' के इस गीत का काफी महत्व है. गीत से ही कहानी का सार समझ आता है. दरअसल यह एक गीत नहीं, बल्कि कबीर द्वारा कहा गया एक दोहा है. कालिदास रंगालय में बिहार नाट्य कला प्रशिक्षणालय (बैट) द्वारा इस नाटक की प्रस्तुति हुई. सुमन सौरभ द्वारा निर्देशित इस नाटक द्वारा लेखक कहना चाहते हैं कि कबीर की न कोई जात थी, न कोई धर्म. इस कारण ही कबीर सब के बीच में रहते थे. सबके चहेते थे. शासकों ने हमेशा जात-धर्म के नाम पर लोगों को लड़ाया है. नाटक शिक्षक दिवस के मौके पर हुआ. बैट के शिक्षक और स्टूडेंट्स द्वारा प्रस्तुत नाटक की शुरुआत कबीर के जन्म-कथा के रहस्योद्घाटन के साथ होती है. वे एक विधवा ब्राह्मणी की नाजायज औलाद थे, जिसे एक जुलाहा दंपति नीरू और नीमा ने पाला-पोसा था. यह जानने के बावजूद कि नीमा उनकी सगी मां नहीं है, कबीर के मां के प्रति प्रेम में कमी नहीं आती. कबीर मुल्ले और पंडित के दुश्मन बन जाते हैं, क्योंकि कबीर की वाणी किसी की बख्शती नहीं है. कबीर अक्सर अपमान सहते हैं, धमकियां सुनते हैं, लेकिन सच्च और खरी बात कहने से नहीं चूकते हैं. वे गलियों और नुक्कड़ों पर अपने मित्रों के संग सत्संग करते हैं और भजन करते हैं, जो पंडितों और मौलानाओं को अच्छा नहीं लगता है.

इसी बीच दिल्ली के सुलतान सिकंदर लोदी बिहार फतह के बाद लौटते हुए दो दिनों के लिए काशी में पड़ाव करते हैं और कोतवाल से कहते हैं कि कबीर से मुलाकात करनी है. लोदी कबीर से मिलता है और बात करता है. सिकंदर लोदी कबीर से उसका मजहब पूछते हैं. कबीर का जवाब होता है, 'एक निरंजन अल्लाह मेरा, हिंदू तुर्क दहूं नहीं मेरा'. यह सुन कर सिकंदर लोदी नाराज हो जाता है और कबीर को नगर से निकलवा देता है.

मंच पर कलाकारों ने खूब जमाया रंग

इनकी अदाकारी बेहतरीन

नाटक में कुछ दो सीन के लिए आये बैट के शिक्षक अरुण सिन्हा, कबीर उदित कुमार, कोतवाल बने इरफान, संजीत शंकर सुमन, सुनिता भारती, राजू कुमार, रणविजय सिंह, अनीत कुमार, सत्येन्द्र, ज्ञान प्रकाश, मुन्ना राय, अमरदीप, प्रवीण, विशाल, वैभव, सुनीता ने भी बहुत अच्छी अदाकारी की.

अब आ रहा है डिजाइनिंग पर ओलिंपियाड

पटना. साइंस ओलिंपियाड, मैथ्स ओलंपियाड तो आपने बहुत सुने होंगे, लेकिन अब आने वाला है डिजाइन में संगीत ओलिंपियाड. स्कूल के स्टूडेंट्स को अपनी फैशन डिजाइनिंग में प्रतिभा निखारने का यह मौका फैशन इंस्टीट्यूट के स्टूडेंट्स ही दे रहे हैं. दरअसल केंद्रीयुथ प्राइवेट लिमिटेड की इकाई 'डिजाइन क्वेस्ट' डिजाइन के क्षेत्र में 'डिजाइन स्कूलर्स' के नाम ओलिंपियाड आयोजित कर रही है. इसमें क्लास 6 से क्लास 12 तक के स्टूडेंट्स को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रचनात्मक हुनर दिखाने का मौका मिलेगा. यह मंच स्कूल से लेकर जिला स्तर और वहां से बढ़ते हुए राज्य स्तर पर अपनी छाप छोड़ते हुए डिजाइन और फैशन के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर की एक बड़ी टीम की रचना करेगा. यह टीम अंत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रौशन करेगी.

यह मंच निफ्ट और नाड के ग्रेजुएट स्टूडेंट्स की टीम द्वारा संचालित किया जायेगा. इसके लिए रजिस्ट्रेशन फॉर्म डिजाइन क्वेस्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध है. यह अनोखा ओलिंपियाड बिहार और झारखंड के स्टूडेंट्स के लिए हो रहा है और इसमें किसी भी स्कूल के स्टूडेंट्स भाग ले सकते हैं.

जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय

बिहार आर्ट थियेटर की प्रस्तुति सुमन सौरभ निर्देशित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' का मंचन

भास्कर न्यूज | पटना

दुख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।
जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोय तू फूल,
तोहि फूल को फूल है बाको है तिरसूल।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर,
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

कबीर वाणी के ये दोहे शुक्रवार की शाम कालिदास रंगालय में गाए जा रहे थे। इन दोहों में जीवन के गहरे दर्शन को अपने में समेटे था, जो कि चंद शब्दों में ही बहुत बड़ी बात कह रहा था। यह सब हो रहा था जहां बिहार आर्ट थियेटर की ओर से मंचित और सुमन सौरभ निर्देशित नाटक कबीरा खड़ा बाजार में के मंचन के दौरान। नाटक में कबीर के दोहों को गीत और संगीत के साथ शानदार प्रस्तुति दी गई। इस संगीतमय नाटक में कबीर के विचारों को मंच पर उतारा गया। नाटक में कबीर के जीवन के विभिन्न हिस्सों को दिखाया गया। कबीर के बचपन से लेकर बुढ़ापे तक की पूरी यात्रा को नाटक के जरिये मंच पर उतारा गया। नाटक में कबीर के समय के समाज की परिस्थितियों, उस समय की सामाजिक कुरीतियों, घर-घर फैले अंधविश्वास को भी दिखाया गया।

निर्देशक- सुमन सौरभ।
कलाकार- उदित, [illegible] कुमार, इरफान अहमद, राजू कुमार, डॉ संजय सुमन, सुनीता भारती, [illegible]।

कालिदास रंगालय में कबीरा खड़ा बाजार में नाटक का शानदार तरीके से मंचन करते कलाकार।

Ashok / Dr. Siddhnath Kumar (अशोक/डा. सिद्धनाथ कुमार)
Played Shakyakumaree: the Lover & Wife of the Protagonist

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
हलचल

युद्ध से हत्या होती है, विजय नहीं

आखिर विजय क्या है? एक व्यक्ति की महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए लाखों लोगों की मौत तथा आकड़े किसी की जीत है? क्षत-विक्षत शवों के ढेर, तड़पते घायल, विलाप करती विधवाएं। इसमें विजय कहां है? कलिंग युद्ध के बाद इन सवालों ने सम्राट अशोक के दिलोदिमाग में उथलपुथल मचा दिया। जीत का जश्न मनाने की जगह उनका दिल रो उठा। तब उन्हें एहसास होता है कि असली जीत राज्यों को जीतने से नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं को जीतने से हासिल होती है। वे शांति और अहिंसा का व्रत लेते हुए बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। ये ऐतिहासिक दृश्य बुधवार को कालिदास रंगालय के मंच पर प्रस्तुत हुए। मौका था सातवें डॉ चतुर्भुज अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का। महोत्सव के पहले दिन कला जागरण पटना द्वारा नाटक 'अशोक' का मंचन किया गया। सिद्धनाथ कुमार के लिखे नाटक की सुमन कुमार के निर्देशन में प्रस्तुति हुई।

अशोक के हृदय परिवर्तन की कहानी

नाटक में मौर्य सम्राट अशोक के जीवन का एक विश्लेषणात्मक चित्रण है। मंच पर तक्षशिला, पाटलिपुत्र एवं कलिंग की पृष्ठभूमि दिखाते हुए अशोक के जीवनकाल के विभिन्न हिस्सों को प्रस्तुत किया गया। अशोक ने जब मगध साम्राज्य का सिंहासन संभाला तो उनके मन में विस्तार की विराट महत्वाकांक्षा जाग उठी। उन्होंने राज्यों को जीतना शुरू कर दिया। अनेक युद्ध किए। आखिर में उनकी निगाह में कलिंग आया। उसे जीतने के लिए उन्होंने भयानक युद्ध किए। कई दिनों तक युद्ध चलते रहे। आखिर अशोक को विजय हासिल तो हुई, लेकिन लाखों मौतों और जख्मों की कीमत पर। युद्धभूमि के दृश्य देखकर उनका दिल दहल गया। उन्हें एहसास हुआ कि मानवता का कितना नुकसान हुआ है। वे पश्चाताप करने की राह पर निकल पड़ते हैं और बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेते हैं। पूरी दुनिया में शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने लगते हैं। अशोक का जीवन पूरी तरह बदल जाता है।

कालिदास रंगालय में 'अशोक' नाटक का मंचन करते कलाकार जागरण

मंच पर कलाकार

सम्राट अशोक	आमिर हक
राधागुप्त	राकेश कुमार
अमात्य	मिथिलेश प्रसाद सिन्हा
शाक्य कुमारी	सुनीता भारती
असंधिमित्रा	प्रीति सिंह
कुणाल	अमित
प्रतिहारी	विवेक, दीपक
संघमित्रा	नेहा
विदूषक	अरविंद कुमार
कलिंगराज	शंकर सुमन

नेपथ्य कलाकार

रूप सज्जा	हीरालाल राय
वस्त्र विन्यास	मोहम्मद सदरुद्दीन
मंच सज्जा	अविनाश कुमार
मंच निर्माण	हीरा लाल मिस्त्री

नाट्य महोत्सव का उद्घाटन बिहार संगीत नाट्य अकादमी के अध्यक्ष और वरिष्ठ कवि आलोक धन्वा व दूरदर्शन पटना के निदेशक पीएन सिंह ने किया। डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में स्मारिका का विमोचन भी किया गया। युवा लेखक व फिल्मकार रविराज पटेल को डॉ. चतुर्भुज नाट्य पत्रकारिता सम्मान दिया गया। मौके पर डॉ. अरविंद कुमार, नीरज बहरिया, सुशील शर्मा आदि मौजूद थे।

कालिदास रंगालय में सुमन कुमार के निर्देशन में 'अशोक' नाटक के साथ शुरू हुआ अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव

...और महत्वाकांक्षी अशोक बदल गया

पटना | कार्यालय संवाददाता

सत्ता के लिए इतना रक्तपात...महत्वाकांक्षा मनुष्य से क्या-क्या नहीं कराती...महत्वाकांक्षाएं मरती नहीं...उनका स्वरूप बदलता है...इस तरह के संवादों से पूरा नाटक भरा था। संवाद दर्शकों को बेहद पसंद आ रहे थे। हर दो-चार मिनट पर तालियां बज रही थीं। कालिदास रंगालय में बुधवार शाम 'अशोक' नाटक का पहली बार मंचन हुआ और इसी के साथ अखिल भारतीय नाट्योत्सव की शुरुआत भी हो गई। कला जागरण के कलाकारों ने डॉ. सिद्धनाथ लिखित नाटक को सुमन कुमार के निर्देशन में मंच पर उतारा।

पूरी तैयारी के साथ : सम्राट अशोक के जीवन पर केंद्रित इस नाटक को कलाकारों ने बेहद प्रभावी तरीके से मंच पर उभारा। हालांकि मंच सज्जा के लिहाज से कुछ खास नहीं दिखा, लेकिन कलाकारों ने अपने अभिनय से इस कमी को लगभग ढक दिया। चाहे अशोक की भूमिका निभा रहे आमिर हक हों, पत्नी की भूमिका निभा रहीं सुनीता भारती व प्रीति सिंह हों, इन कलाकारों ने अपने चरित्र के साथ पूरा न्याय किया। कैसे सत्ता के लिए अशोक ने अपने भाइयों की हत्या तक करवा दी और आखिर में कैसे बौद्ध धर्म की शरण में चला गया, इसे मिथिलेश सिन्हा, अमित, सरविंद, शंकर सुमन, सुधीर कमल, विवेक, दीपक, नेहा, खालिद खान, पारितोष, सूरज लाल, चंदन जैसे कलाकारों ने प्रभावी तरीके से उतारा। पिछली अन्य प्रस्तुतियों की अपेक्षा कला जागरण की यह प्रस्तुति ज्यादा प्रभावी दिखी।

डॉ. चतुर्भुज नाट्य सम्मान : पहले दिन युवा लेखक व समीक्षक रविराज पटेल को डॉ. चतुर्भुज नाट्य पत्रकारिता सम्मान दिया गया। इस मौके पर संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा, डीडी बिहार के निदेशक पीएन सिंह, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, गणेश प्रसाद सिन्हा, मिथिलेश कुमारी, डॉ. बीएन विश्वकर्मा, अमियनाथ चटर्जी, कन्हैया, नीलेश्वर उपस्थित रहे।

नाट्योत्सव में आज

- स्पार्टकस लेटस फाइट
- प्रस्तुति-बंगाल नाट्य दल, सुचुझ सांस्कृतिक मंच
- समय-6.30 बजे से

कालिदास रंगालय में अखिल भारतीय नाट्योत्सव के पहले दिन बुधवार अशोक नाटक का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

Sur Sundari / Dr. Shanti Jain Played Protagonist

(सुर सुंदरी / डॉ. शांति जैन नायिका की भूमिका)

...नाम चलेगा. | है. बिहार में ऐसे आयोजन हों. | वाले गांव के दर्शन के जरिए हर फ्रेम को बखूबी प्रस्तुत किया गया. | तैयार नहीं हो रहे हैं. | के गांधी मैदान में मुख्य...

...टक मंचन

'सुरसुंदरी' के जरिये बताया, क्या होती है नारी शक्ति

चांदी के सात सिक्कों की कहानी है सुरसुंदरी

...पटना

...[illegible] ही निकला. ...आकर मुझे इस ..., मैं साथ इतना ... मैं क्या सोच कर ... हो गया. लेकिन ... मर्यादा में रह कर ... इस अपमान का ...दरी से शादी करने ... आधी रात को उसे ...ता है, तो वह कुछ ...ने गुस्से को जाहिर ... की यह कहानी ... कालिदास रंगालय ...जला जागरण मंच ... का मंचन किया ... के लिए मंच को ... सजाया गया था.

कालिदास रंगालय में मंचित नाटक 'सुरसुंदरी' का एक दृश्य.

ये थे कलाकार

सुनीता भारती, आमिर हक, डॉ शंकर सुमन, अविनेन्द्र कुमार, प्रीति सिंह, विभा श्रीवास्तव, मिथिलेश कुमार सिन्हा, रमेश कुमार, सुधीर कमल, नेहा, रिया, सूरज लाल, परितोष कुमार विनाश, विवेक कुमार, अमित कुमार, वसुधा, दीपक कुमार, आयुष कुमार.

नाटक में कभी राजमहल, तो कभी घने जंगल के दृश्यों को बखूबी पेश किया गया. नाटक का निर्देशन सुमन कुमार ने किया. बता दें कि नारी शक्ति पर आधारित सुरसुंदरी नाटक जैन शास्त्रों से ली गयी कथा के आधार पर रचा गया है. सुरसुंदरी राजा रिपुमर्दन और रानी रतिसुंदरी की कन्या थी. सुरसुंदरी एक विद्यालय में पढ़ती थी, जहां उसके साथ अमर कुमार भी पढ़ रहा था. सुरसुंदरी विद्यालय प्रांगण में सो... उसके आंचल में सात चांदी ... बंधे थे, जिन्हें खोलकर अ... मिठाई मंगाता है और मित्रों में ... है. सुरसुंदरी के जागने पर अम... बताता है. सुरसुंदरी क्रोधित हो... को फटकारती है. अमर कु... कहता है कि सात सिक्कों से ... है राजा का राज्य ले लेती. सु... चुनौती देते हुए कहती है, हां... सात सिक्कों से राजा का राज्य... समय बीतता है. दोनों का ... जाता है. विवाह के कुछ दिन ... दोनों बाहर निकलते हैं, तो ... बचपन में सुरसुंदरी की बातें ... याद आती है. वह बदला ले... आंचल में सात सिक्के बांध... छोड़ देता है.

नारी जब ठान ले तो कर गुजरती है

पटना (एसएनबी)। [illegible] कालिदास रंगालय में नाटक 'सुरसुंदरी' का मंचन किया गया। [illegible] डॉ. शांति जैन और निर्देशन सुमन कुमार का था।

कलाकार : नाटक में सुरसुंदरी राजा रिपुमर्दन और रानी [illegible]

कालिदास रंगालय में सुरसुंदरी का मंचन

[illegible]

नाटक के एक दृश्य में कलाकार।

[illegible] सुरसुन्दरी जीवित नहीं होगी। [illegible] अमर उससे माफी मांगता है, फिर दोनों एक हो जाते हैं।

नाटक में सुनीता भारती, अविनेन्द्र कुमार, मिथिलेश कुमार सिन्हा, नेहा, रिया, विवेक कुमार, दीपक कुमार, आमिर हक, प्रीति सिंह, रमेश कुमार, सूरज लाल, विवेक कुमार, अमित कुमार, आयुष कुमार, वसुधा, डॉ. शंकर सुमन, विभा श्रीवास्तव, सुधीर कमल, परितोष कुमार विनाश आदि ने अभिनय किया।

Tukde-Tukde Me Aurat / Arvind Kumar (based on the story of Mamta Mehrotra)

टुकड़े-टुकड़े में औरत / अरविन्द कुमार (ममता मेहरोत्रा की कहानी पर आधारित)

2 Shows

प्रभात खबर
prabhatkhabar.com

लाइफ पट

कालिदास रंगालय. टुकड़ों-टुकड़ों में औरत का मंचन

अपनी अस्मत बचाने के लिए जिंदगी तक गंवा दी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

समाज में औरतों को किस-किस तरह की परेशानियों का सामना करना होता है. कैसे वह अपनी अस्मत को बचाने के लिए खुद की जिंदगी गंवा देती है. औरतों की इस कहानी को कालिदास रंगालय के मंच पर प्रस्तुत किया गया. गुरुवार को तीन दिवसीय प्रेमनाथ खन्ना स्मृति आदि शक्ति नाट्य महोत्सव का आयोजन किया गया. इस नाट्योत्सव के दौरान हर दिन कला जागरण द्वारा नाटकों का मंचन किया जायेगा. इस आयोजन में चर्चित लेखिका ममता मेहरोत्रा की सात कहानियों का तीन दिनों में मंचन किया जा रहा है. इस कार्यक्रम की शुरुआत विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक देवेन्द्र राज अंकुर को प्रेम नाथ स्मृति सम्मान प्रदान कर किया गया. शुरुआत में ममता मेहरोत्रा लिखित कहानियों की नाट्य ...

गुरुवार को कालिदास रंगालय के मंच पर नाटक का मंचन करते कलाकार.

टुकड़े में औरत का समिश्रण है. इसमें इमैजिनेशन की हुई कहानी प्रस्तुत ... भूखे बच्चों की लिए रोटी और अपने तन ढकने के लिए एक अदद साड़ी ... र आती है, जहां उसे ... और अस्मिता ... रहित एक एक ... जिसमें उसे ... ना करना होता है ... जो, जो गरीब मोहन है जून की रोटी की खातिर सुदूर उड़ीसा में नौकरी करने पर मजबूर है. फिर भी अपने परिवार का ...

पूर्ण अस्तित्व के लिए संघर्ष करती रही स्त्री

- टुकड़ों-टुकड़ों में औरत, अवश और सफर का मंचन
- देवेन्द्र राज अंकुर को 'प्रेमनाथ स्मृति सम्मान'
- आदिशक्ति नाट्य महोत्सव शुरू

...तिर बाहर ...बूर ...पने भूखे बच्चों ...टी का एक टुक... ...के. लेकिन उस... ...टुकड़े हो जाते ...कहानी में ... ...है. जुफलिसी ... ...में पिसते एक इं...

साफ
हमारा मिशन

अस्तित्व के लिए स्त्री के संघर्ष को नाटक ने किया साकार

पटना @ सिटी रिपोर्टर

Veergati (वीरगति/नौटंकी शैली)

Played Mother of Protagonist

पाया. इस स्कार में आतरिक्त रनों का संख्या दहाई (10) में थी. टीम से ... एल टेबल टेनिस खेला के मुकाबले शुरू हो जायेंगे. ... ने कहा कि बजट का स्केलटन तैयार है बस उसे फाइनल रूप देना बाकी है. ... दिल्ली रवाना किया जायेगा. ये छात्र गणतंत्र दिवस देखने के अलावा ... होगा 'माना कि अंधेरा घना है, लेकिन दीया जलाना कहां मना है'.

आठवां दिन: 25वें पटना थियेटर फेस्टिवल के अंतर्गत मंचित हुआ नाटक

पैसों के बल पर दबा देते हैं गला

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आमतौर पर मन में कई तरह की बातें चलती रहती हैं. लोग एक-दूसरे के कर्मों को कई तरह से देखते हैं. कोई करना कुछ चाहता है और कर कुछ बैठता है और सामने वाला उसे कुछ और समझ लेता है. कुछ ऐसा ही देखने को मिला नाटक वीरगति में, जिसमें नाटक के एक किरदार सुकुमार का मन धन बंटोरना नहीं, बल्कि कुछ और रहता है. नाटक की यह कहानी देखने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर, यहां मंगलवार को 25वें पटना थियेटर फेस्टिवल अनिल कुमार मुखर्जी शताब्दी नाट्योत्सव के आठवें दिन निर्माण रंगमंच हाजीपुर द्वारा वीरगति नाटक का मंचन किया गया. यह नाटक दर्शकों को शुरू से लेकर अंत तक पसंद आया. नाटक में कई दृश्यों को देख और एक से बढ़ कर एक डायलॉग्स को सुनते हुए दर्शकों ने भरपूर तालियों से कलाकारों का हौसला बढ़ाया. इस नाटक की परिकल्पना और निर्देशन क्षितिज प्रकाश का था.

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार.

नाटक की कहानी

सुकुमार तीन साहूकारों के परिवार का एकमात्र वारिस है. उसका मन धन-दौलत को बंटोरने का नहीं करता बल्कि अमीरी-गरीबी को देख उसका हृदय विचलित रहता है. वह हमेशा समाज की भलाई के लिए आगे रहता है. समाज के लिए ही कुछ करना चाहता है, लेकिन सुकुमार का यह विचार साहूकार परिवारों के लिए चिंता का विषय बना रहता है. इसलिए लोग उसकी शादी करा देते हैं. लेकिन शादी के बाद भी उनका मन नहीं लगता है. इसलिए साहूकार परिवार की चिंता और बढ़ने लगती है. इधर सुकुमार राजा के दरबार में जा कर गालियां देता है. लेकिन साहूकार के मंत्री के साथ का विद्रोह उसकी जय-जयकार के शोर में दब जाता है और सक्रिय विरोध का गला पैसों के बल पर घोंट दिया जाता है.

ये थे कलाकार

सुकुमार	अमित कुमार
राजकुमारी	रूबी खातून
मां	सुनीता भारती
साहूकार	1. क्षितिज प्रकाश,
	2. रवि शंकर पासवान
	3. गुलशन कुमार
ठाकुर	प्रफुल्ल कुमार
महामंत्री	जितेश कुमार सिंह
राजा	उमेश कुमार निराला

शांत मन से पढ़ें, तो होगा बेहतर

पटना. ज्ञान का भंडार खुला हुआ है, लेकिन इसमें गोता लगाने के लिए आपको रीडिंग का तरीका सीखना होगा. अगर रीडिंग स्किल आपने सीख लिया तो किसी से भी रू-ब-रू हो सकते हैं. यह बातें अमिटी के मार्केटिंग मैनेजर अनिल कुमार पांडेय ने कहीं. वे मंगलवार को श्री अरविंद महिला कॉलेज में अंग्रेजी डिपार्टमेंट द्वारा 'कैसे करें रीडिंग स्किल डेवलप' विषय पर आयोजित परिचर्चा को संबोधित कर रहे थे.

श्री अरविंद महिला कॉलेज में 'कैसे करें रीडिंग स्किल डेवलप' विषय पर परिचर्चा आयोजित

कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि हायर एजुकेशन के स्टूडेंट्स को ज्यादा बोलकर नहीं पढ़ना चाहिए, शांत मन से पढ़ाई करने की आवश्यकता है. रीडिंग सीखने पर दुनिया खुली होती है. वहीं, अंग्रेजी डिपार्टमेंट की एचओडी डॉ सारिका सिन्हा ने छात्राओं को कहा कि रीडिंग समुद्र की तरह है. हमेशा याद रखने के लिए रीडिंग स्किल बेहतर होना चाहिए. हायर एजुकेशन में बोल कर पढ़ने से रीडिंग की स्पीड कम हो जाती है. इस मौके पर छात्राओं ने सवाल-जवाब भी किया, जिसमें रीडिंग के अनेक टिप्स दिये गये.

C TY EVENTS/CHAI-T M

कालिदास रंगालय में नाटक का मंचन करते कलाकार

'कालिदास' में सपना रह गया अधूरा

अमीरी गरीबी खत्म हो...

पैसा भी बहुत ताकत है....

हर जगह भ्रष्टाचार...

Doshi Kaun / Arun Sinha (दोषी कौन / अरुण सिन्हा)

सिटी हैपनिंग
प्रभात खबर
www.prabhatkhabar.com

कालिदास रंगालय में हुआ नाटक 'दोषी कौन' का मंचन

शहर के चकाचौंध में भी लोगों को होता है पछतावा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

शहर की रौनक सबको प्यारी लगती है. चाहे वह गांव का कोई गंवार हो या शहर में रह रहा अमीरजादा. इस रौनक के चकाचौंध में लोग आकर यहीं के बन जाते हैं. कई तो इतने चौंधिया जाते हैं कि उन्हें अपनी सीमा तक का पता नहीं रहता है. गांव छोड़ लोग शहर में तो आ जाते हैं, लेकिन वे यहां आकर रंगरेलियां भी मनाने लगते हैं.

इन रंगरेलियों के बीच उन्हें कुछ समय बाद पछतावा भी होता है. ऐसी ही एक कहानी को शनिवार को कालिदास रंगालय में दिखाया गया. वरिष्ठ रंगकर्मी, निर्देशक और नाटककार अरुण कुमार सिन्हा द्वारा लिखित इस कहानी को नाटक 'दोषी कौन' के रूप में न सिर्फ दिखाया गया, बल्कि समाज की सच्चाई को भी प्रदर्शित किया गया. लोगों को संदेश भी दिया गया कि लोग अपने दायरे को कतई ना भूला करें. बिहार आर्ट थियेटर द्वारा मंचित इस नाटक का निर्देशन भी अरुण कुमार सिन्हा ने किया.

नाटक में हिस्सा लेते कलाकार.

यह थी कहानी

शारदा शहीद फौजी की एक विधवा है, जो गांव में खेती-बाड़ी संभाल कर अपनी अनाथ भतीजी (अपने भाई की बेटी) पुष्पा का पालन-पोषण करती है. वह अपने पुत्र को शहर के हॉस्टल में रख कर बेहतर शिक्षा प्रदान कर रही है, जो अपने गांव में काफी दिनों से नहीं आया है.

बीमार शारदा के इलाज के लिए, दवा लेने गयी पुष्पा का अपहरण हो जाता है. शारदा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बिरजू पुष्पा की तलाश करता रह जाता है, लेकिन वह नहीं मिलती है. इधर अपने बचपन के दोस्त जयमंगल के परामर्श पर बिरजू गांव की संपत्ति बेच कर शहर आ जाता है. गलत संगत के कारण बिरजू शराब और शबाब में डूब जाता है. एक दिन उसकी मुलाकात स्वरूपाबाई से होती है, तो वह उसकी सुंदरता के मोहपाश में बंध जाता है. रंगरेलियां और अंतरंगता बढ़ जाती है. तभी कुछ दिनों बाद उसे पता चलता है कि यह पुष्पा है, जो बचपन में खो गयी थी. इस बात को जानने के बाद वह स्वरूपाबाई आत्महत्या कर लेती है. उस बात के पश्चाताप के लिए बिरजू भी जहर की शीशी की तरफ बढ़ जाता है.

इन्होंने किया अभिनय

नाटक में पुष्पा और स्वरूपाबाई का किरदार उज्ज्वला गांगुली ने निभाया. बिरजू का किरदार अभिषेक ने और शारदा का किरदार सुनिता भारती ने निभाया. इनके अलावा अमृता कुमारी, रविभूषण शर्मा मट्टू, अभिषेक सिंह, विशाल तिवारी, उमेश कुमार, नंदलाल सिंह, दीपांकर शर्मा, एस कृष्णन (नायडू), प्रवीण कुमार ने भी अभिनय किया. इसके अलावा नेपथ्य में मंच परिकल्पना में प्रदीप गांगुली, प्रकाश संचालन में राज कुमार शर्मा, प्रकाश परिकल्पना में सुमन सौरभ और सुजीत कुमार शर्मा, ध्वनि प्रभाव में उपेंद्र कुमार ने बेहतरीन सहयोग किया.

दोहरी मंच सज्जा से बढ़ गयी खूबसूरती

नाटक में गांव के परिवेश और शहर के परिवेश को दिखाया गया था. इसके लिए दो तरह की मंच सज्जा की गयी. पहले परदे के उठते ही सामने गांव का परिवेश था. उसके बाद दूसरे परदे के पीछे शहर के परिवेश को दिखाया गया था. नाटक में कहानी के अनुरूप ही मंच सज्जा को दिखाया गया था.

शनिवार को कालिदास रंगालय में 'दोषी कौन' नाटक का भावपूर्ण दृश्य। • हिन्दुस्तान

...और स्वरूपाबाई ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली

पटना | कार्यालय संवाददाता

मंचन

- बैंड स्थापना दिवस समारोह में 'दोषी कौन?' नाटक का मंचन
- अरुण कुमार सिन्हा लिखित व निर्देशित नाटक का मंचन

एक और नया नाटक शनिवार को देखने को मिला। कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर के कलाकारों ने 'दोषी कौन' नाटक का मंचन किया। अरुण सिन्हा लिखित और निर्देशित इस नाटक में एक लड़की की जिंदगी की कहानी के जरिए जिस्मफरोशी व नारी शोषण पर सवाल उठाया गया। पूछा गया कि इसके लिए दोषी कौन? वह लड़की या समाज।

कहानी थी सब कुछ : नाटक की कहानी एक फौजी परिवार की थी। फौजी की विधवा शारदा गांव में रहती है। अपनी अनाथ भतीजी पुष्पा के साथ। और पुत्र बिरजू को पढ़ने के लिए शहर भेजती है। शारदा बीमार पड़ती है। पुष्पा दवा लाने के लिए जाती है। इस बीच उसका अपहरण हो जाता है। बिरजू गांव आता है, तब तक मां की मृत्यु हो जाती है और बहन भी नहीं मिलती है। दोस्त की सलाह पर खेत बेचता है। शहर में जाकर बसता है और रंगरलियों में डूब जाता है। कोठेवाली बाई स्वरूपाबाई से अंतरंगता बढ़ती है और आखिर में पता चलता है कि स्वरूपा ही पुष्पा है। फिर क्या था, स्वरूपा लज्जित होकर जहर खा लेती है। बिरजू पश्चाताप में डूब जाता है। उज्ज्वला गांगुली (स्वरूपाबाई), अभिषेक (बिरजू), अमृता कुमारी (पुष्पा), सुनिता भारती (शारदा) आदि ने अभिनय किया।

विटी

prabhatkhabar.com

लाइफ @ पटना

www.prabhatkhabar.com

पॉलिटिकल ड्रामा. नाटक में नेता और कुरसी की दिखायी गयी लीला

यहां कुरसी जाते ही जैसे मिट जाती है 'खास' की पहचान

कालिदास रंगालय के मंच पर कुरसी के लिए मारामारी की कहानी बयां करते कलाकार.

नाटक का मंचन करते कलाकार.

■ **कलाकारों ने दिखाया नेता बनना है कितना आसान**

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अजी नेता बनना, तो बहुत आसान काम है, लेकिन मुझे भाषण देनी नहीं आती रामु की इस सवाल पर प्यारेलाल कहता है कि तू भी कमाल करता है. चुनावी भाषण के लिए और करना ही क्या होता है? एक फॉर्मूला याद रखना बस. अरे ऐसे मौके पर सत्ता में आने के पहले देश की गड़बड़ियों के पीछे सरकार सरकार का हाल बताइयेगा और सत्ता में आने के बाद उन्हीं गड़बड़ियों के पीछे किसी विदेशी शक्ति का हाथ. सत्ता में आने के लिए ये बातें किसी गांव या शहर में नहीं, बल्कि कालिदास रंगालय के मंच पर देखने को मिला. गुरुवार को यहां नाट्य संस्था कला जागरण द्वारा कुरसी पुराण नाटक का मंचन किया गया, जिसमें कुर्सी पाने के लिए कई तरह के दृश्यों को दर्शाया गया, जिसे देखने के लिए दर्शकों की भीड़ जमती गयी. नाटक के कई दमदार डायलॉग्स व दृश्यों को देख दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी. इस हास्य नाटक का निर्देशन सुरेन्द्र कुमार द्वारा किया गया. नाट्य में कई हास्य पात्र थे, जिन्होंने लोगों को हंसने पर मजबूर कर दिया.

यहां धोखा ही धरम है

झूठ और फरेब की दुनिया में कोई भी इनसान किसी का नहीं होता. यहां धोखा ही धरम है. स्वार्थ ही ईमान है और एक दूसरे की लाश पर चढ़ कर अपनी मंजिल हासिल करना चाहते हैं. राजनीति की दुनिया में यह बातें आम होती हैं. नाटक में कुछ उन्हीं बातों का जिक्र किया गया, जहां बेजान कुर्सी ही इनसान की पहचान होती है. कुरसी गयी तो पहचान मिट जाती है. यहां प्यारे लाल राजनीति पार्टी का अध्यक्ष है और वह अपनी चालाकी से एक सीधे-साधे इंसान रामु को राम प्रसाद औरत वाला के अवतार में एम पी के चुनाव में खड़ा करता है. वे अवसरवादी चमचे, कलयुगि बाबाओं और झूठे वादों के बदौलत एमपी बन भी जाते हैं. वे समाज में नारी सशक्तीकरण, दलित और लोगों का कल्याण तो नहीं होता है, लेकिन यहां राम प्रसाद जैसे नेताओं का कल्याण जरूर होता है. ऐसे में रामप्रसाद की प्रेमिका को आगे के लिए कुछ बातें सुझाती है और वे प्यारेलाल को सबक सिखाने के लिए जुट जाती है. कोतवाल की मदद से शहर में दंगा करवा कर उसकी जिम्मेवारी प्यारे लाल पर मढ़ती है. इसके बाद उसे उसे राम प्रसाद की पार्टी का अध्यक्ष बना दिया जाता है और प्यारे लाल की कुर्सी चली जाती है. कुर्सी जाते लोग उसे पहचानना छोड़ देते हैं. नाटक में कुर्सी पुराण की कहानी को कलाकारों ने बखूबी अंदाज में पेश किया.

मंच पर

- प्यारे लाल- गुंजन कुमार
- प्रधान- स्वदेश कुमार
- कोतवाल सिंह- डॉ शंकर सुमन
- चित्रा- सुनीता भारती
- छम्मन- सुनीता कुमारी
- अखबारी लाल- कुमुद रंजन
- राम प्रसाद- आमिर हक
- भोला- अमित कुमार
- सफाया स्वामी- मिथिलेश सिन्हा

अच्छे सोच के लिए अच्छा

150 बच्चों को मुफ्त में

Accident / S. P. Singh(एक्सीडेंट /एस. पी. सिंह) Played Protagonist

नाटक • कालिदास रंगालय में एसपी सिंह लिखित नाटक एक्सीडेंट में कलाकारों ने उठाया सवाल

धर्म के नाम पर कबतक लड़ोगे?

नाटक में योग की राजनीति पर कटाक्ष

खगौल • डीबी स्टार

खेतों में जा रहा एक किसान पूछता है यह अनुलोम-विलोम क्या है? उसका साथी बताता है यह योगासन है इससे शरीर स्वास्थ्य रहता है। आज के भाग-दौड़ की जिंदगी में प्रदूषण से बचने के लिए योग जरूरी है।

आज सरकार भी योग के प्रति गंभीर है। किसान कहता है कि ऐसा योग तो हम रोज खेतों में करते हैं। वह योग बताओ जिससे भूख मिटे, प्यास मिटे, गरीबी दूर हो। खेत में मेहनत करने के दौरान तो हम योग कर ही लेते हैं। उसका साथी कहता है हम क्या जानें, यह तो सरकार ही बता सकती है।

सदा वाणी सोशल एजुकेशन फॉर डेवलपमेंट एंड अवेयरनेस ने योग पर देश में जारी राजनीति पर कटाक्ष करते हुए शनिवार को दानापुर स्टेशन के समीप नुक्कड़ नाटक कहें का अनुलोम-विलोम का प्रदर्शन किया। इसे उदय कुमार ने लिखा और निर्देशित किया।

नुक्कड़ में प्रेमराज, रामनाथ, मनोज सिन्हा, उदय कुमार, रंजन, शिवम, शशिकांत, प्रदीप विश्वकर्मा, रोहित, कबीर श्रीवास्तव ने अभिनय किया।

पटना • डीबी स्टार

21 वीं सदी में भी देश के ज्यादातर लोगों के सामने रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या मुंह बाए खड़ी है। महंगाई दिनों दिन बढ़ती जा रही है, शिक्षा और स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएं पाना आम आदमी के बस से बाहर की चीज होती जा रही है। देश में बेरोजगारों की फौज खड़ी है लेकिन आज भी कई राजनीतिक पार्टी और धर्म के नाम पर राजनीति कर लोगों में नफरत के बीज बोते हैं और वोट पा लेते हैं। ऐसे में शनिवार की शाम कालिदास रंगालय में एस.पी सिंह लिखित नाटक एक्सीडेंट के मंचन में सवाल उठाया कि आखिर हम कब धर्मों के [illegible] और [illegible] [illegible]

ये थे कलाकार

• गुंजन कुमार, पंकज सिंह, सुनीता भारती, चित्रा श्रीवास्तव, आर नरेन्द्र, सतीश कुमार, सौरभ सिंह, पारस कुमार, सौरभ कुमार, मो. सफाउद्दीन, अजय कुमार श्रीवास्तव, रणधीर सिंह, राहुल सिन्हा, शुभम कुमार आदि।

इस नाटक का मंचन किया गया। नाटक में दो अनजान मुसाफिरों की कहानी दिखाई गई जिनकी मुलाकात एक बस एक्सीडेंट में होती है। दोनों के बीच गहरी दोस्ती होती है, लेकिन समाज के व्यवहार से उन्हें दुख होता है कि आज भी हमारी पहचान हिन्दू और मुसलमान के तौर पर है। नाटक बताता है कि हमारी असली पहचान [illegible] [illegible]

छात्रों के बीच मारपीट पुलिस के आने पर भागे हमलावर

■ पटना।

सहारा न्यूज ब्यूरो

पाटलिपुत्रा थाने के महावीर वात्सल्य के समीप छात्रों के बीच मारपीट में एक छात्र अनुपम जख्मी हो गया। मौके पर किसी [illegible] के पहुंचने पर हमलावर भाग निकले। इस संबंध में थाने में तीन छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। घटना के संबंध में बताया गया है कि [illegible] के डिफेंस कॉलोनी निवासी अनुपम को उसके ही घर के समीप छात्रों ने उस वक्त पकड़ लिया, जब वह ऑटो से [illegible] जा रहा था। पुलिस को अनुपम ने बताया कि बाइक सवार उसके विरोधियों ने उसे ऑटो से उतार कर पिटाई शुरू कर दी। मारपीट के दौरान ही पुलिस के जवान पहुंच गये तो हमलावर भाग निकले। पाटलिपुत्रा थाने के इंस्पेक्टर [illegible] के मुताबिक अनुपम के बयान पर [illegible] के तीन लड़कों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है।

'इंसान बनकर निभाया था कर्तव्य, हिंदू-मुसलमान नहीं'

■ पटना।

सहारा न्यूज ब्यूरो

[illegible] नाटक 'एक्सीडेंट' का मंचन [illegible] कालिदास रंगालय में [illegible] किया गया। [illegible]

नाटक 'एक्सीडेंट' का मंचन

कलाकारों की प्रस्तुति पर भावविभोर हुए दर्शक

[illegible] ने किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में [illegible] एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में [illegible] मौजूद थे।

नाटक की कहानी दो अनजान मुसाफिरों की है जिनकी मुलाकात एक बस एक्सीडेंट के कारण होती है। हादसे में इन दोनों की मुलाकात [illegible]

कालिदास रंगालय में नाटक एक्सीडेंट का मंचन करते कलाकार।

[illegible]

बदलने लगती है। [illegible] किशोर व रिंकी [illegible] अस्पताल से घर लेकर चले जाते हैं। कुछ साल बाद पटना आने के दौरान दोनों [illegible] के बजाये नजमा के घर में ही रुकने का फैसला लेते हैं लेकिन नजमा के मोहल्ले में सांप्रदायिकता की आग फैली रहती है। [illegible] नजमा के घर पहुंचते हैं और उसे [illegible] देते हैं। [illegible] लेकिन यह खुशी थोड़ी देर में [illegible] बदल जाती है। माहौल खराब होने के कारण [illegible] जिसके कारण किशोर व रिंकी को [illegible] पड़ता है। इस पर किशोर कहता है कि हमने एक इंसान बनकर कर्तव्य का निर्वहन किया था, हिन्दू या मुसलमान बनकर नहीं। नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों में गुंजन कुमार, पंकज सिंह, सुनीता भारती, चित्रा श्रीवास्तव, आर. नरेन्द्र, सतीश कुमार, सौरभ सिंह, पारस कुमार, सौरभ कुमार, मो. सफाउद्दीन, अजय श्रीवास्तव, रणधीर सिंह, राहुल सिन्हा व शुभम कुमार शामिल हैं।

नाट्य प्रस्तुतिकरण का नया विधान

'परिंदा उड़ गया' से उठा 'मास्टर-साहेब' से पर्दा गिरा

(आज समाचार सेवा)

पटना। कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में आर. पी. तरुण की स्मृति में तीन दिवसीय नाट्योत्सव के दूसरे दिन डॉ. दीनानाथ साहनी की तीन कहानियां मंच पर साकार हुईं।

मंचन के जरिये 'परिंदा उड़ गया', 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर-साहेब' की प्रस्तुति ऐसी रही कि तीनों ही नाट्य प्रस्तुतियां एकाकार हो गयीं। इसमें 'परिंदा उड़ गया' को आधार में रख कर, शेष दो कहानियां 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर-साहेब' को प्रस्तुत किया गया। कला जागरण की इस प्रस्तुति में पहली कहानी के कलाकार ही सूत्रधार की भूमिका निभाते हैं। कहानी के नाट्य प्रस्तुतिकरण का यह नया विधान है, जिसकी शुरुआत जाने-माने निर्देशक सुमन कुमार ने 'टुकड़ों-टुकड़ों में औरत' में शुरू किया है। इन कहानियों पर आधारित प्रस्तुतियों ने काफी सराहा है। आधार नाटक 'परिंदा उड़ गया' एक भाव प्रधान प्रस्तुति है। इसमें निगाह के कलाकारों की अपनी जीवित मित्र मंडली के विस्थापन के दर्द को चित्रित किया गया है। ऐसा लगता है, जब दोस्तों की एक अपनी सहज दुनिया होती है जिसमें वे चहचहाते, फुदकते और अपनी अपनी भावनाओं को आपस में बांटते हैं। ऐसा लगता है, यह दुनिया कभी खत्म न होने के लिए है। लेकिन, जिंदगी की भागदौड़ में यह प्यारा संसार बिखर जाता है और जिंदगी उस खाली पिंजड़े की तरह रह जाती है, जिससे निकल कर परिंदा उड़ गया हो।

'विद्रोही स्त्री' वर्तमान समय में नारी शोषण और इसके प्रतिक्रिया स्वरूप नारी-शक्ति के पुनर्जागरण का एक सुंदर उदाहरण है। शारदा अपनी स्थिति से समझौता कर लेती है। लेकिन, विद्रोह का छोटा सा स्वर उसका पति सह नहीं पाता और उसकी हत्या कर देता है। उसके पति रघुनाथ की रखैल कमला यह सब देखती है और बड़ी बहादुरी से उसका प्रतिकार करती है। कमला कहती है कि 'मुझे ऐसा सधवा नहीं बनना कि अत्याचार झेलो और मर जाओ। दुनिया में मेरे लिए दूसरे भी मर्द हैं।' नारी जाति के अंदर दमन के खिलाफ फूट पड़े ज्वालामुखी का वह लावा है, जो नारी को निकृष्ट समझने वाले अत्याचारियों के अहं को खाक करने के लिए काफी है।

तीसरी कहानी 'मास्टर-साहेब', भ्रष्ट शिक्षकों के कारण विद्यालयों की नष्ट होती पवित्रता और हमारी नयी पौध पर उसके कुप्रभाव को दर्शाता है। भरत सर एक ऐसे शिक्षक हैं, जो बच्चों को तो चरित्र की उज्ज्वलता का पाठ पढ़ाते हैं, परंतु उनका अपना ही चरित्र इतना गिरा हुआ है कि जब इसका रहस्योद्घाटन होता है, तो गुरुभक्त और सबसे सरल मासूम बच्चे के मुंह से भी उनके लिए गाली निकल जाती है। मंच पर शुभम सिंह, डॉ. शंकर सुमन, सुनीता भारती, नितीश कुमार, आमिर हक, राहुल उपाध्याय, रूबी खातून, अरविंद कुमार, आराध्या सिन्हा, मिथिलेश सिन्हा, अनंत, पुष्कर एवं अमित ने पात्रों को जीवंतता के साथ जिया। गुंजन कुमार का संगीत प्रभावपूर्ण रहा। नाट्य रूपांतरण अरविंद कुमार ने किया था।

उड़ गया परिंदा व पकवाघर का मंचन

कालिदास रंगालय में आरपी तरुण की स्मृति में तीन दिवसीय नाट्योत्सव में सुप्रसिद्ध रंगकर्मी सुमन कुमार के निर्देशन में कला जागरण संस्था द्वारा 'परिंदा उड़ गया' नाटक में तीन कहानियों की प्रस्तुति हुई। डॉ. दीनानाथ साहनी की कहानियों 'परिंदा उड़ गया', 'विद्रोही स्त्री' और 'मास्टर साहब' का मंचन एक ही प्लॉट में सजाकर किया गया। अरविंद कुमार ने नाट्य रूपांतरण किया। नाटक में कथा का मुख्य आधार 'परिंदा उड़ गया' है। मुख्य पात्र ही बाकी कहानियों के लिए सूत्रधार बन जाता है। दो और कहानियां उन दोस्तों के जीवन का हिस्सा बन जाती हैं। शुभम सिंह, डॉ. शंकर सुमन, नीतीश कुमार, आमिर हक, राहुल उपाध्याय, रूबी खातुन, अरविंद कुमार आदि ने अभिनय किया। नाट्योत्सव में आखिरी दिन रविवार को हृषिकेश सुलभ की कहानी पकवाघर का मंचन मो. जहांगीर के निर्देशन में किया गया।

Bhrun Hatya: Ek Abhishap (भ्रूण हत्या : एक अभिशाप)

Played protagonist

पटना, 5 जुलाई 2016 www.jagran.com III

हलचल

...धनों का अभाव

...पेशियल्टी अस्पताल

...एं।

...में एक ही टेक्नीशियन है। ...र डॉट सेंटर का टेक्नीशियन ...टीबी संबंधी जांच और दवा ...उपलब्ध है।

...लिए एक ही शौचालय

...महिलाएं सुबह आठ बजे ...तजार कर रही थीं, मगर ...रे में दो टेक्नीशियन ड्यूटी ...चल रहा था। परिसर में ...रीजों के लिए एक ही ...है। शिशु टीकाकरण केंद्र ...क भी मरीज नहीं थे।

अल्ट्रासाउंड के लिए सुबह नौ बजे से इंतजार कर रही हूं, मगर डॉक्टर नहीं है। यह स्थिति आए दिन रहती है। इससे मैं ...हूं, अन्य लोगों की भी ...

– रेखा मौर्य

जरूरत पड़ने पर रोगी कल्याण समिति से डेंगू और एचआइवी किट मंगाकर जांच की जाती है। करीब चार माह पहले एलिजा रीडर और सीबीसी मशीन मंगाने के लिए स्वास्थ्य विभाग को लिखा गया था। प्रधान सचिव ने बिहार मेडिकल सर्विसेज एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर कार्पोरेशन लिमिटेड को मशीन खरीदने को कहा था। अस्पताल को जल्द ये मशीनें मिल जाएंगी। पारामेडिकल स्टाफ की कमी है, नर्सों की बहाली जारी है। अल्ट्रासाउंड की डॉक्टर का फोन आया था। उनको रास्ते में पैर में फ्रैक्चर हो गया, इसलिए आने में विलंब हो रहा है। सर्पदंश की दवा नहीं मिल पाई है। जल्द ही खरीद ली जाएगी।

– डॉ. मनोज कुमार सिन्हा, अधीक्षक, न्यू गार्डिनर रोड हॉस्पिटल

ड्रेसर का पद खाली

अस्पताल में कोई ड्रेसर नहीं है। नर्स के सहारे ड्रेसिंग रूम का काम चलाया जाता है। करीब चार माह पहले यहां का ड्रेसर सेवानिवृत्त हो गया है, तब से यह पद खाली है। ड्रेसिंग रूम और एक्स-रे रूम के सामने फूलों की क्यारी में रूई आदि मेडिकल वेस्ट बिखरे पड़े थे। अस्पताल में ओपीडी में 20 और इनडोर में 31 प्रकार की दवाएं उपलब्ध थीं। इस सीजन के लिए जरूरी सर्पदंश की दवा उपलब्ध नहीं थी। इमरजेंसी में डायरिया और उल्टी के एक-दो मरीज पहुंच रहे थे, जिनका उपचार किया जा रहा था।

सुबह आठ बजे से अल्ट्रासाउंड कराने के लिए बैठी हूं। मगर पता नहीं अभी तक डॉक्टर क्यों नहीं आईं। पूछने पर भी कहीं से जानकारी नहीं मिल रही है।

– रंजीता सुमन, बोरिंग रोड

बेटी बचाने के लिए दीपिका को लेनी पड़ी कानूनी मदद

'भ्रूण हत्या अभिशाप' का मंचन करते कलाकार। जागरण

मां मुझे बचा लो। मैं इस दुनिया में आना चाहती हूं। मैं भी सरोजनी नायडू और इंदिरा गांधी बनकर देश की सेवा करना चाहती हूं। मुझे दादा क्यों मारना चाहते हैं। क्यों मुझे दुनिया में नहीं आने देना चाहते। बताओ मां। कुछ ऐसे ही मार्मिक संवाद कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में सुनने को मिले। मौका था बिहार कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सौजन्य से शुभेच्छु सेवा द्वारा आयोजित नाटक 'कन्या भ्रूण हत्या अभिशाप' के मंचन का। एसी गौतम द्वारा लिखित एवं कुमार मानव के निर्देशन में कलाकारों ने एक मां के दर्द और गर्भ में पल रहे बच्ची की वेदना को प्रस्तुत कर घटते लिंगानुपात को बखूबी दिखाया। सेठ करोड़ीमल सूद का कारोबार करता है। लड़कियों से बेहद नफरत करता है। इसके उलट सेठानी लड़कियों की पक्षधर है। इसे लेकर पति-पत्नी में आए दिन झगड़ा होता है। सेठ का लड़का राकेश बंगलुरू में रहकर पढ़ाई करता है। इसी दौरान उसे दीपिका नाम की लड़की से प्यार हो जाता है। दोनों विवाह कर घर लौटते हैं। इससे करोड़ीमल काफी नाराज होता है। उसे घर में रहने की जगह नहीं देता। दोस्त रामलाल के समझाने पर सेठ इसकी सशर्त इजाजत देता है, प्रसव के समय बहू को सेठ की बात माननी होती है। कुछ दिन बाद दीपिका गर्भधारण करती है। उसकी जांच के लिए सेठ बहाने बनाकर एक डॉक्टर के पास ले जाता है। डॉ. सक्सेना कन्या भ्रूण की जानकारी देता है। यह सुन सेठ बच्ची को गर्भ में मारने की योजना बनाता है। दीपिका स्वप्न में गर्भ में पल रही बच्ची के साथ बात करती है। वह इस दुनिया में लाने का वादा बच्ची से करती है। इधर डॉक्टर गर्भ में पल रही बच्ची को मारने की तैयारी करता है, तभी दीपिका फोन करके थानेदार को अस्पताल में बुला लेती है। थानेदार लिंग परीक्षण एवं भ्रूण हत्या कराने को लेकर डॉक्टर और सेठ को जेल भेज देता है।

मंच पर कलाकार	
सेठ	सशांत कुमार
सेठानी	विभा सिन्हा
राकेश	कुमार मानव
दीपिका	सुनीता भारती
रामलाल	ओम कपूर
डॉ. सक्सेना	अश्विनी कुमार
थानेदार	बलराम कुमार
मंच से परे कलाकार	
प्रकाश व्यवस्था	शुभम चंद्र
रूप सज्जा	विजय कुमार चौधरी

Pande Ji Ka Patara

(पांडे जी का पतरा)

रंगमंच : कालिदास रंगालय में 'पांडे जी का पतरा' नाटक का हुआ मंचन

पतरा में लिखल बात मानी त भूखे मर जायम

शास्त्र के अनुसार हमनी चले लगम त भूखले मर जायम। जेतना बात पांडे जी के पतरा में लिखल रह हई ओतना जो पंडिताइन के अंदर में रह हई। कुछ ऐसे ही संवाद कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में गुरुवार को प्रस्तुत हो रहे थे। सभागार में बैठे दर्शक ठेठ मगही अंदाज में कलाकारों द्वारा प्रस्तुत संवाद सुन लोट-पोट हो रहे थे। कला संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार सरकार के सौजन्य से अहसास कलाकृति संस्था द्वारा मगही लेखक अभिमन्यु प्रसाद एवं कुमार मानव के निर्देशन में पांडे जी के पतरा का मंचन किया गया। पंडिताइन की भूमिका में वरिष्ठ रंगकर्मी सुनीता भारती के अभिनय को दर्शकों ने खूब सराहा। सत्यदेव का बेटा संतोष अपनी दादी के श्राद्ध को माफ कर खा जाता है। अपने बेटे के इस पाप से मुक्त होने के लिए सत्यदेव गांव के पुरोहित पांडेय जी के पास जाता है। पाप से मुक्ति के लिए पंडित ने सत्यदेव को सभी लड़कों के वजन अनुसार सोना के गहना बना कर दान करने की बात कहता है। लड़कों के झुंड में पंडित का लड़का सतीश की बात आई तो पंडित फिर से पतरा देख नया नियम बनाने की योजना बनाता है। पंडित कहता है कि पांच सात लड़कन, एक संतोष, सबहा मां के एको न दोष। यह बात सुनकर सत्यदेव आग बबूला हो जाता है। उधर गांव के ताड़ीखाना में मगरू और ढोढाइ ताड़ी पीकर आपस में झगड़ा कर कहते हैं कि जो नर मछली खात है मुड़ा पीछ समेत, सो पैकुंठ जात है नाती पोता समेत। ऐसा इसी बात पर झगड़ा कर कहते है कि पांडे जी अपने अनुसार नियम बनाकर लोगों को ठगते हैं। अपने ऊपर जब बात आती है तो सारा पतरा और पैतरा दोनों बदल जाता है।

कालिदास रंगालय में 'पांडे जी का पतरा' नाटक का मंचन करते कलाकार।

ये थे कलाकार	
पंडिताइन	सुनीता भारती
झगड़ानाथ पांडेय	अरविंद कुमार
सरस्वती	रिमा सिन्हा
महेश	कुमार मानव
मगरू	विजय कुमार चौधरी
ठाकुर	ओम कपूर
सत्यदेव शर्मा	भुवनेश्वर शर्मा

कला, धर्म, समाज, संस्था

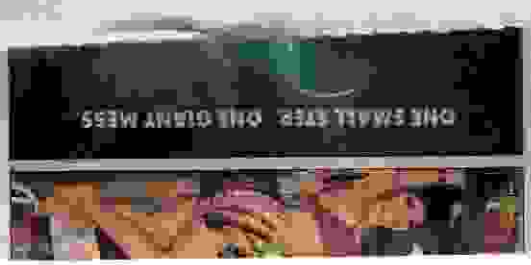

कालिदास रंगालय | संस्था अहसास कलाकृति ने नाटक पांडे जी के पतरा का मंचन किया

वैज्ञानिक युग में भी पंडा-पुरोहित के चक्कर में पड़कर ठगे जा रहे हैं लोग

सिटी रिपोर्टर | पटना

कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सौजन्य से कला के प्रति समर्पित संस्था अहसास कलाकृति ने नाटक पांडे जी के पतरा का मंचन कालिदास रंगालय में किया। मगही के स्वर्ग लेखक अभिमन्यु प्रसाद मौर्य एवं युवा रंगकर्मी कुमार मानव के निर्देशन में मंचित नाटक को कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवंत कर दिया। झगड़नाथ पांडे की भूमिका में अरविंद कुमार ने दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं। पंडिताइन की भूमिका में सुनीता भारती को दर्शकों ने पसंद किया। वहीं, ठाकुर की भूमिका में ओम कपूर ने दर्शकों को अपने अभिनय से खूब गुदगुदाया। नाटक पांडे जी के पतरा में यही दर्शाया गया कि आज हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं, फिर भी पंडा और पुरोहित के चक्कर में पड़कर ठगे जाते हैं और वो कर बैठते हैं, जो हमें नहीं करना चाहिए।

नाटक के अन्य कलाकार : अरविंद नाथ, रिमा सिन्हा, विजय कुमार चौधरी, सत्यम कुमार, आशीष कुमार, पृथ्वी राज पासवान, भुवनेश्वर कुमार, विशाल

...जयंती मनाई गई

...की जयंती मनाई गई

...फिल्म निर्माण ... अवसर पर

...कार का महत्वपूर्ण प्रयास

Lorhanath / Directed by Shivnarayan Jha "Kunal"

लोढ़ानाथ / मैथिलि नाटक/ निर्देशक : शिवनारायण झा "कुणाल"

दैनिक जागरण
जागरण सिटी — हलचल
www.jagran.com

मिथिला की समृद्ध संस्कृति के दिखे विविध रंग

संस्कृति के महत्व और संरक्षण का संदेश देकर विदा हुआ चेतना समिति द्वारा आयोजित महाकवि विद्यापति स्मृति पर्व

सबकुछ गंवाकर महादेव को आया होश

विद्यापति के गीतों ने सबका दिल जीता

मिथिलांचल की संस्कृति से हुए रूबरू

ये थे कलाकार

मंच परे कलाकार

हिन्दुस्तान
पटना LIVE

चूड़ा-माछ, मखान आओर की चाही बाजू...

विद्यापति पर्व

बच्चों ने मचाया धमाल

Play Name: Naya Bangla ☆ Written by: A. K. Mukharji ☆ Asst. Director : Sunita Bharti

Also played the main female role in the play

कालिदास रंगालय • अनिल मुखर्जी लिखित 'नया बंगला' का निर्देशन किया सुमन कुमार ने

पूरे परिवार को बर्बाद कर देता है भ्रष्टाचार से कमाया हुआ धन

पटना • डीबी स्टार

धन कमाने की इच्छा हर मनुष्य में होती है. हर कोई बेहतर जीवनस्तर के लिए धन कमाना चाहता है लेकिन कई बार लोग धन कमाने के लिए अनैतिक कार्यों या भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। लेकिन वह भूल जाते हैं कि भ्रष्ट तरीके से आने वाला धन जिस तेजी से आता है उससे कहीं तेजी से चला भी जाता है। भ्रष्टाचार से कमाया धन कमाने वाले के साथ उसके पूरे परिवार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। कुछ इन्हीं बातों को दिखा गया कालिदास रंगालय में सोमवार की शाम मंचित नाटक 'नया बंगला'।

अनिल कुमार मुखर्जी के लिखे इस नाटक का निर्देशन वरिष्ठ निर्देशक सुमन कुमार ने किया था। नाटक में दिखाया गया कि हरेंद्रनाथ और उनकी पत्नी रुक्मणी अपनी दो संतान अमित और अरुणा के साथ एक खुशहाल जिंदगी बिताते हैं। [illegible] एक बंगलादेशी शरणार्थी है जिसे वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त करते हैं साथ ही अपने घर में आश्रय देते हैं। हरेंद्रनाथ ठेकेदारी करते हैं, ठेकेदारी में भ्रष्ट तरीकों से [illegible] ने पास किया। [illegible]

[illegible] रुक्मणी [illegible] पति-पत्नी में [illegible] भी होती है। [illegible] जीवन के साथ भी अनैतिक संबंध बन जाते हैं। [illegible] परिवार की सुख-शांति चली जाती है।

कलाकार

• सुनीता भारती, [illegible] लिपिन कुमार, [illegible] आदि।

[illegible]

अंतिम दिन दो नाटकों का मंचन

[illegible]

4 से 10 फरवरी तक होगी फिल्म मेकिंग कार्यशाला

पटना • डीबी स्टार

कला संस्कृति विभाग एवं बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम लिमिटेड द्वारा चार से 10 फरवरी तक फिल्म मेकिंग कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। [illegible]

कालिदास रंगालय • रंग सृष्टि की ओर से चल रहे नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन सुमन कुमार के निर्देशन में 'नया बंगला' ने दिखाया

अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण बर्बाद होता परिवार

पटना • डीबी स्टार

महत्वाकांक्षा अच्छी बात है लेकिन यह महत्वाकांक्षा जब अर्थहीन बन जाए तो भलाई की जगह नुकसान पहुंचाती है। इसी अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण कई परिवार बर्बाद हो चुके हैं। ऐसे ही एक परिवार की कहानी दिखी बुधवार की शाम कालिदास रंगालय में मंचित नाटक 'नया बंगला' में। यहां रंग सृष्टि की ओर से चल रहे नाट्य महोत्सव के अंतिम दिन इसका मंचन किया गया।

नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से मंचित इस नाटक के निर्देशक थे सुमन कुमार। नाटक का मुख्यपात्र हरेंद्रनाथ पत्नी रुक्मणी और दो बच्चों अमित और अरुणा के साथ रहता है। परिवार खुशहाली से भरा जीवन बिताता है। [illegible] शरणार्थी को वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त करता है साथ ही अपने घर में आश्रय भी देता है। हरेंद्रनाथ ने ठेकेदारी से अच्छा पैसा कमाने के बाद शहर के [illegible] इलाके में नया बंगला बनवाया है। [illegible] रुक्मणी मध्यम वर्ग की जीवन शैली को छोड़ उच्च [illegible] की अपनाने की कोशिश करने लगती है। इसके कारण पति-पत्नी में काफी तकरार भी होती है।

वैवाहिक [illegible] का परिणाम यह होता है कि अमित नशेबाज और अरुणा चरित्रहीन हो जाती है। रुक्मणी [illegible] रहने वाले [illegible] के प्रति आकर्षित हो जाती है। साथ ही जीवन के साथ भी उसके अनैतिक संबंध हो जाते हैं। बाद में रुक्मणी को अपने कामों के कारण शर्मसार होना पड़ता है। इसके बाद वह जीवन पर आरोप लगा घर से निकाल देती है। [illegible] भविष्य और [illegible] इस प्रकार [illegible] सह नहीं पाता और आत्महत्या कर लेता है। पूरा परिवार एक अर्थहीन महत्वाकांक्षा के कारण बर्बाद हो जाता है।

कलाकार

• सुनीता भारती, [illegible] अमित [illegible] कुमार, [illegible]
• नाट्यकार - अनिल कु. मुखर्जी
• सहायक निर्देशक - सुनीता भारती
• निर्देशक - सुमन कुमार

Babuji Ka Pass Book

(बाबूजी का पास बुक)

कालिदास रंगालय

कला-जागरण की ओर से आयोजित तीन दिवसीय हास्य नाट्य महोत्सव में मधुकर सिंह लिखित नाटक का मंचन

बाबूजी का पासबुक में दिखा भौतिकवादी समाज

पटना • डीबी स्टार

21वीं सदी में भले मनुष्य या समाज ने जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति की है। हम मंगल ग्रह पर बस्तियां बसाने की सोच रहे हैं लेकिन जिस तेजी से हमने तरक्की की है उसी तेजी से अपने अंदर की इंसानियत को खोते जा रहे हैं। हाल यह है कि समाज में बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो अपने माता-पिता को न तो सम्मान दे पा रहे हैं और न ही उनके प्रति अपने फर्ज को निभा पा रहे हैं। ऐसे ही लोगों की कहानी को दिखाया गया कालिदास रंगालय में शुक्रवार की शाम मंचित नाटक बाबूजी का पासबुक में। नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से आयोजित तीन दिवसीय हास्य नाट्य महोत्सव के पहले दिन इसका मंचन किया गया था। कला जागरण, पटना की ओर से हुआ और मधुकर सिंह लिखित इस नाटक के निर्देशक थे वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार।

नाटक में एक ऐसे स्वतंत्रता सेनानी की कहानी दिखाई गई जो समाज में फैल रही अवसरवादी और गंदी सामाजिक मानसिकता से त्रस्त है। इसमें दिखाया गया कि आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाला स्वतंत्रता सेनानी आज समाज में घट रही घटनाओं से आहत है। इस स्वतंत्रता सेनानी का एक भरा-पूरा परिवार है, सीमित नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के बाद परिवार में उसकी [illegible] नहीं होती। बेटे, बेटियों और बहुओं में से किसी को भी बाबूजी की बीमारी की चिंता नहीं होती।

यह थे कलाकार

अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, राजेश प्रसाद सिन्हा, सुरविंद कुमार, मिथिलेश कुमार सिन्हा, नीतीश कुमार, अखिल हक, श्री शंकर सुमन, पुष्प ठाकुर, सुषमा सिन्हा, सुनील भारती, रिया, हरेकृष्ण सिंह मुन्ना।

उन्हें अगर कोई चिंता रहती है तो वह है बाबूजी के पासबुक की। उनके बीच आपस में ही मार-धाड़ और तकरार होती है ताकि बाबूजी के पैसे उन्हें मिल जाएं। बदले में पिता की सेवा की भावना किसी में नहीं होती। नाटक सवाल करता है कि क्या यही हमारा समाज है, अगर आज यह हाल है तो आने वाला कल क्या होगा? क्या हम ऐसे ही घृणित परिवार और समाज की ओर बढ़ रहे हैं जहां इंसानियत नाम मिट रही है और हैवानियत छाई हुई है।

आप कौन चीज के डायरेक्टर हैं जी, नाटक ने दर्शकों को खूब हंसाया

कालिदास रंगालय में चल रहे हास्य नाट्य महोत्सव के पहले दिन मंचित होने वाला दूसरा नाटक था 'आप कौन चीज के डायरेक्टर हैं जी'। मासूम आर्ट ग्रुप डाल्टेनगंज, झारखंड के कलाकारों की ओर से मंचित इस नाटक के लेखक और निर्देशक थे सैकत चट्टोपाध्याय। नाटक ने अपने संवाद और स्थितियों से दर्शकों को खूब हंसाया। नाटक में कलाकारों ने हास्य के रंग में अपने संवादों को रंग कई गंभीर बातें कहीं। इसमें नक्सलवाद काल के थीम को आज के आम आदमी का प्रतिनिधि के तौर पर दिखाया गया जो [illegible] है।

नुक्कड़ नाटक में दिखी भ्रष्टाचार की कहानी

हास्य नाट्य महोत्सव के पहले कालिदास रंगालय में नुक्कड़ नाटक अंधेर नगरी की भी प्रस्तुति दी गई। सी-कुल्चर्स की ओर से हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र लिखित इस नाटक के निर्देशक थे रमेश कुमार रघु। नाटक में समाज में फैले भ्रष्टाचार, शासन तंत्र के मूर्खतापूर्ण निर्णयों और इनसे बदहाल आम आदमी की कहानी दिखाई गई।

...ा ने प्लूटो नामक वामन ग्रह की खोज ...ंडल का नौवां ग्रह माना जाता था।

हिन्दुस्तान 06

पटना • शनिवार • 18 फरवरी 2017

नाटक

कालिदास रंगालय में शुक्रवार की शाम तीन दिवसीय हास्य नाट्य महोत्सव कला जागरण का नाटक 'बाबूजी का पासबुक' के मंचन से शुरू हुआ। दूसरी प्रस्तुति झारखंड डाल्टेनगंज की मासूम आर्ट ग्रुप की "आप कौन चीज के डायरेक्टर हैं जी' की रही। नाटक ने बॉलीवुड की चर्चित हास्य फिल्म 'जाने भी दो यारों' की यादें ताजा कर दीं। मंच पर सिकंदर कुमार, आनंद कुमार रवि, परशु राम, उज्ज्वल कुमार सिन्हा, कमलकांत कुमार आदि कलाकार थे।

हलचल

पीयू में री-एडमिशन अब 22 तक

पटना। पटना विश्वविद्यालय में एमए, एमएससी और एमकॉम के चौथे सेमेस्टर में री-एडमिशन की तिथि बढ़ा दी गई है। छात्रों को एक और मौका दिया गया है। इसके अलावा पीजी स्तरीय वोकेशनल कोर्स में भी दाखिले की तिथि बढ़ा दी गई है। छात्र अब 22 फरवरी तक चौथे सेमेस्टर में री-एडमिशन करा सकते हैं। विवि की ओर से दाखिले की तिथि बढ़ाने की सूचना जारी कर दी गई है।

एएन कॉलेज में डिजिटल पेमेंट पर सेमिनार

पटना। एएन कॉलेज में 'डिजिटल पेमेंट फॉर बेटर टूमारो' विषय पर शुक्रवार को सेमिनार हुआ। यह आयोजन 'टेकब्रेन' संस्था के साथ मिलकर किया गया था। सेमिनार के

Play Name: Shershaah ☆ Written by: Dr. Chaturbhuj ☆ Asst. Director : Sunita Bharti

Also played Lad Malika in this play

ACTIVITY

मंच पर जीवंत हुई शेरशाह की बहादुरी

पटना • डीबी स्टार

अपनी बुद्धिमत्ता और बहादुरी से ताकतवर मुगल सल्तनत को खत्म कर अपनी बादशाहत कायम करने वाले बिहार के सपूत शेरशाह सूरी की कहानी दिखी मंगलवार को कालिदास रंगालय में मंचित नाटक शेरशाह में। प्रसिद्ध रंगकर्मी डॉ. चतुर्भुज द्वारा रचित इस ऐतिहासिक नाटक में शेरशाह सूरी की जिंदगी के कई पहलुओं से दर्शकों को रूबरू कराया गया। रणधीर सिंह निर्देशित इस नाटक का मंचन माध्यम फाउंडेशन की ओर से किया गया था।

नाटक में इतिहास के इस महान नायक के व्यक्तित्व को दिखाया गया। नाटक में दिखा कि शेरशाह सूरी का नाम पहले फरीद खां था और वह बिहार के सासाराम का रहने वाला था। शेर को एक ही वार से मार गिराने के कारण उसका नाम शेर खां पड़ा। अपनी बुद्धिमत्ता और बहादुरी से भारत का सम्राट ही नहीं बल्कि इतिहास का प्रसिद्ध व्यक्ति बना। पांच साल के अपने शासनकाल में ही उसने लोकहित में इतने काम किए जिसे आज भी याद किया जाता है। ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण उसकी दूरदर्शिता को दिखाता है।

यह बहादुर शासक महिलाओं का भी बेहद इज्जत करता था। नाटक में दिखाया गया कि युद्ध में हार चुके हुमायूं की बेगम मलिका मुअज्जमा को सम्मान के साथ अपने शौहर से मिलवाया। कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में अपने द्वारा छोड़े गए हथगोले से वह बुरी तरह से जल गया जो बाद में उसकी मौत का कारण बना। यह महान शासक अपनी इच्छा के मुताबिक मृत्यु के बाद [illegible] सासाराम के मकबरे में दफन किया गया।

श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र • साइंस डे पर 500 छात्रों ने निकाली साइंस रैली

बच्चों ने कहा-विज्ञान जाने

फैशन शो के ऑडिशन

दिव्यांगों ने दिखाया ज

बिहार दिवस पर दिव्यांग बच्चे दिखाएंगे

नाटक में दिखी शेरशाह की बुद्धिमत्ता और वीरता

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

पटना।

कालिदास रंगालय में डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित पांच दिवसीय छठे अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आगाज मंगलवार को हुआ। महोत्सव के पहले दिन नाटक 'शेरशाह सूरी' का मंचन किया गया। नाटक के मंचन से पहले संस्था [illegible] पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए पत्रकार [illegible] डॉ. चतुर्भुज रंग पुरस्कार सम्मान 2017 प्रदान किया गया। वहीं [illegible] नारायण सम्मान 2017 से कलाकार [illegible] कुमार सम्मानित किया गया।

> 'शेरशाह सूरी' के मंचन के साथ डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित नाट्य महोत्सव शुरू

कालिदास रंगालय में नाटक 'शेरशाह सूरी' का मंचन करते कलाकार।

महोत्सव में डॉ. चतुर्भुज लिखित और रणधीर सिंह निर्देशित नाटक 'शेरशाह सूरी' का मंचन किया गया। नाटक में शेरशाह की बुद्धिमत्ता और वीरता को दर्शाया गया। [illegible] अपनी बुद्धि [illegible] की वजह से कामयाबी [illegible] हासिल करता है जहां से वह मुगल सल्तनत को उखाड़ फेंकने की कसम पूरा करने की रणनीति बनाता है। साथ ही उसे कामयाबी हासिल कर हिन्दुस्तान पर अपना झंडा फहराता है। कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में अपने द्वारा छोड़े गए हथगोले से बुरी तरह जल कर घायल हो जाता है और वहीं अंतिम सांस लेता है। उसने अंतिम क्षणों में देखा कि कालिंजर के किले पर शेरशाह के नाम का पताका लहरा रहा है।

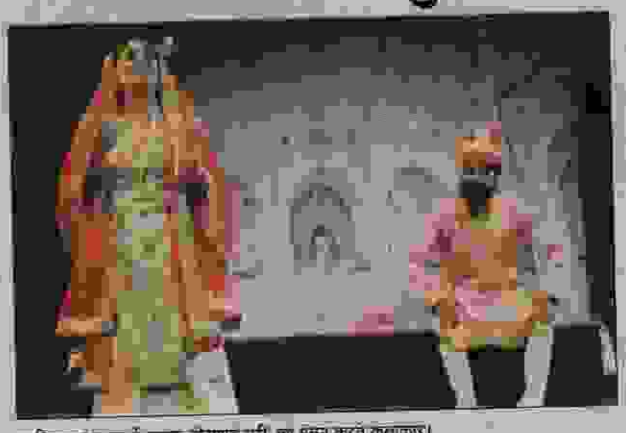

नाटक में अभिनय रूप सुनीता भारती, अरविन्द कुमार, राम राज, पारस झा, मनु राज, माला सिन्हा, मानसी श्रीवास्तव, आर. नरेन्द्र, सफुद्दीन, सोनी [illegible], चंदन, कंचन वर्मा, अजय कुमार श्रीवास्तव, मनीष मेहता, राजेश मेहता, प्रिंस, नंद किशोर मेहता आदि ने भाग लिया।

नाटक हंसते-हंसते का मंचन

पटना। गोद में बैठा पिता के दुलारा [illegible] था। पिता झुनझुनलाल बेटे को इस आस में पालता है कि वह बुढ़ापे की लाठी बनेगा। पर बेटे को ऐसी बीमारी हो जाती कि उसे बचाना मुश्किल हो जाता है।

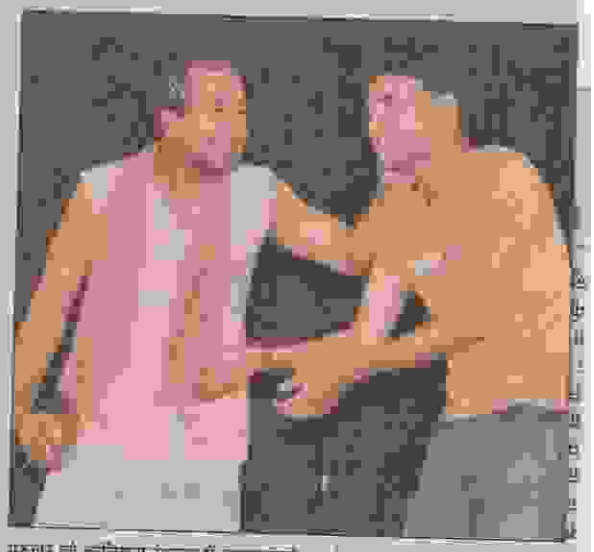

पुत्र की मौत के बाद पिता भी पागल हो जाता है। कालिदास रंगालय में गुरुवार को नाटक हंसते-हंसते के मंचन के साथ [illegible]। प्रकाश सिंह लिखित व निर्देशित इस नाटक [illegible] ने अभिनय किया।

गुरुवार को कालिदास रंगालय में नाटक हंसते-हंसते का मंचन करते कलाकार।

खन्ना के निधन पर शोक

[illegible]

'गर्मी से बचाव को इंतजाम नहीं'

पटना। [illegible] प्रवक्ता राजीव रंजन ने आरोप लगाया कि बिहार सरकार [illegible] लगातार कर रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि [illegible] गर्मी से बचाव के लिए बिहार सरकार ने कोई इंतजाम नहीं किया है।

श्री रंजन ने आशंका जताई कि अगले डेढ़ माह में बिजली के तार टूटने, शॉर्ट सर्किट और लू लगने से [illegible] आर्थिक और जान माल की क्षति हो सकती है। [illegible]

[illegible]

पुत्र की मौत के बाद पागल हो जाता है झुनझुनलाल

[illegible]

मंच पर कलाकार : [illegible]

Play Name: Yakshini ☆ **Written by:** Arvind Kumar ☆ **Director :** Sunita Bharti

Played double role : Bulakani (the washer woman) and
Madhavi (Shravast Princess, the model of the Chawry Bearer)

पटना

हिंदी दिवस 09

साइकिल के जरिये महिला लड़ रही अधिकारों की लड़ाई 12

गंगा किनारे मिल गयी यक्षिणी!

- अभिलेख भवन में सुनीता भारती द्वारा निर्देशित नाटक यक्षिणी का हुआ मंचन

लक्ष्मी की प्रतिमा मान कर पूजा-अर्चना की जाने लगी थी

थोड़ी चूक भी हो गयी!

Url of the play video: https://youtu.be/NDRHKH1bycA

सिटी फ्रंट पेज

dainikbhaskar.com दैनिक भास्कर, पटना सोमवार, 17 जुलाई, 2017

यक्षिणी : अनोखी कला का नमूना

पटना संग्रहालय में रखी गई चामर ग्राहिणी यक्षिणी अपनी अनोखी कला के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध है। गंगा के दीदारगंज घाट पर धोबी एक पत्थर पर कपड़े धोते थे। 18 अक्टूबर, 1917 को एक धोबिन वहां पहुंची। उसने बच्चे को पत्थर के एक कोने पर बिठा दिया और दूसरे कोने पर कपड़े धोने लगी। तभी एक सांप पत्थर की बगल में घुस गया। धोबिन के शोर मचाने पर पहुंचे लोगों ने सांप को पकड़ने के लिए पत्थर पलटा तो वह यक्षिणी की मूर्ति निकली। 17 दिसंबर, 1917 को यह मूर्ति पटना म्यूजियम लाई गई। रविवार की शाम प्रेमचंद रंगशाला में नाटक यक्षिणी का मंचन हुआ।

विस्तार से पढ़ें डीबी स्टार पेज 2

राहत | पटना सिटी, गुलजारबाग, बांकीपुर, राजेंद्रनगर, कंकड़बाग-1 व 2 डिविजन में सुधरेंगे हालात

Nadi Ka Pani (नदी का पानी)

Played Central Character

पटना LIVE

पटना

कालिदास रंगालय में माध्यम फाउंडेशन के कलाकारों ने डॉ. चतुर्भुज लिखित नाटक 'नदी का पानी' का किया अभिनय

जमींदारी ठसक और किसानों का दर्द मंच पर

मंचन

- कालिदास रंगालय में हुआ 'नदी का पानी' नाटक का मंचन
- डॉ चतुर्भुज लिखित नाटक धर्मेश मेहता के निर्देशन में मंचित

प्रभात खबर | लाइफ पटना

हुकूमत. खेत में पानी पटाने के लिए परेशानी से जूझते रहे

रहमत ने की गांव की मदद

- कालिदास रंगालय में नदी का पानी नाटक का किया गया मंचन

तब उनकी फसल भी जलने लगती है

इनकी दिखी कलाकारी

Play Name: **Jaychand Ke Aansu** ☆ Written by: **Dr. Chhotu Narayan Singh** ☆ Director : **Sunita Bharti**

Sunita Bharti played Sanyukta

prabhatkhabar.com लाइफ पटना 30.01.2018 10

नाट्य मंचन | कालिदास रंगालय और गांधी मैदान में किया गया नाटक का मंचन

...और जयचंद पर आक्रमण कर देता है मुहम्मद गोरी

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

आपसी द्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत हो कर व्यक्ति अपनी संस्कृति और राष्ट्र से द्रोह तो करता लेकिन उसका परिणाम स्वयं उसके लिए भी घातक होता है. कुछ ऐसी कहानी देखने को मिली कालिदास रंगालय के मंच पर यहां सोमवार को संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से डॉ छोटू नारायण सिंह रचित प्रबंध काव्य जयचंद के आंसू नाटक की काव्य नाट्य की प्रस्तुति हुई. इस नाटक में सभी कलाकारों ने अपनी-अपनी भूमिकाओं को बखूबी निभाया. नाटक के दमदार डायलॉग्स को सुन और नाटक के दृश्यों को देखते हुए दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायीं. नाटक का निर्देशन सुनिता भारती द्वारा किया गया.

नाटक में दिखाया गया कि मुहम्मद गोरी को 1192 में आमंत्रित करने के बाद, जो अनेक घटना क्रम घटते हैं और जिनकी परिणति पृथ्वीराज की मृत्यु और भारत के पराधीनता में होती है. ... जयचंद अनुबंधित नहीं कर ... पृथ्वी राज को कैद करने के बाद मुहम्मद गोरी अपने सहयोगी जयचंद पर भी आक्रमण कर देता है. पहले दृश्य में जब जयचंद गोरी इस अनपेक्षित आक्रमण का कारण पूछता है, तो गोरी जयचंद को उसके कुकृत्यों के लिए धिक्कारते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी पृथ्वीराज के शौर्य और राष्ट्रभक्ति के लिए उसके प्रतिफल को खुले हृदय से प्रशंसा करता है. यही इस काव्य नाटक की विशेषता है.

कालिदास रंगालय में नाटक प्रस्तुत करते कलाकार

हे राम ... बापू को बिहारी जन का सलाम

पटना. महात्मा गांधी के 70वीं शहादत के अवसर पर पटना इप्टा और शहर के दो दर्जन से अधिक सांस्कृतिक सामाजिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय विशेष कार्यक्रम 'हे राम... बापू को बिहारी जन का सलाम' की शुरुआत भिखारी ठाकुर रंगभूमि (गांधी मैदान) में हुआ. सोमवार को कार्यक्रम की शुरुआत में बिहार इप्टा के महासचिव तनवीर अख्तर ने दो दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा रखते हुए कहा कि पटना के कलाकार, साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी और सामाजिक कार्यकर्ता अपने अंदाज में बापू को श्रद्धांजलि देने के लिए विशेष कार्यक्रम 'हे राम...बापू को बिहारी जन का सलाम' का आयोजन कर रहे हैं. इसके तहत नाटक, गीत, कविता पाठ और चित्रांकन के जरिये आम जन से महात्मा गांधी की शहादत के कारणों और वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर आगामी विमर्श किया जायेगा. उन्होंने कहा कि आज हमारे देश में जो माहौल पैदा किया जा रहा है, उसमें गांधी की प्रासंगिकता काफी बढ़ गयी है.

हो बुजदिल की कद्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है...

हिन्दुस्तान पटना • 30 जनवरी 2018 24

कालिदास रंगालय

पटना | कार्यालय संवाददाता

एक काव्यात्मक प्रस्तुति। कलाकार छंदों में संवाद बोलते रहे और लोग मग्न होकर देखते रहे। कालिदास रंगालय में सोमवार शाम एक अलग तरह की प्रस्तुति देखने को मिली। फेसेस के कलाकारों ने डॉ छोटू नारायण सिंह द्वारा लिखित 'जयचंद के आंसू' नाटक पेश किया। सुनिता भारती के निर्देशन में इसका मंचन हुआ।

इस नाटक के केंद्र में खलनायक था। एक ऐसा खलनायक जिसे आज भी इतिहास माफ नहीं कर पाया है। गद्दारी के लिए उसके नाम का प्रयोग होता है। जी हां, 1192 में हुए मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज के युद्ध के दौरान ...

नाटक के कलाकार थे

सुनिता भारती, डॉ शंकर सुमन, कुमार विक्रम, आमिर हक, रवि आनंद, आशुतोष सर्राफ, रोहन मिश्र, विस्मय माझी, कुंदन कुमार, मो सदरुद्दीन।

Url of the play video:
https://youtu.be/WbIY5XJcQ7c

दैनिक जागरण पटना, 30 जनवरी 2018

गद्दारों के लिए मौत की सजा भी बहुत छोटी है

कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में नाटक 'जयचंद के आंसू' का मंचन कलाकारों ने पृथ्वीराज चौहान की शौर्य गाथा को किया पेश

'हो बुजदिल की कद्र, दोस्त यह बात बहुत खोटी है, गद्दारों को सजा मौत की सजा से भी बहुत छोटी है'। 'सजा मौत से भी बढ़कर होती कुछ अगर जहां में, देता तुझको वही किंतु ऐसी कुछ सजा कहां है'। मोहम्मद गोरी ने इसी संवाद के द्वारा जयचंद को सजा दे रहा होता है। जिसने अपने स्वार्थ के लिए देश के साथ गद्दारी की थी। काव्य की कुछ ऐसी पंक्तियां जिसके बहाने कलाकार इतिहास के पन्नों में दर्ज देश भक्त पृथ्वीराज चौहान की शौर्य गाथा को पेश कर रहे थे। वहीं मोहम्मद गोरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए कन्नौज का राजा जयचंद का सहयोग करते दिखाया गया। आपसी द्वेष, मद और भौतिक स्वार्थ से अभिभूत होकर जयचंद अपनी संस्कृति और राष्ट्र से विद्रोह करता है किंतु इसका परिणाम स्वयं उसके लिए घातक होता है। प्रबंध काव्य का नाट्य-रूपांतरण पहली बार दर्शकों को देखने को मिला। फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एथिक्स एंड साइंस के बैनर तले डॉ. छोटू नारायण सिंह लिखित एवं अरविंद कुमार द्वारा नाट्य- रूपांतरित एवं सुनीता भारती के निर्देशन में सोमवार को कालिदास रंगालय के प्रेक्षागृह में 'जयचंद के आंसू' का मंचन किया गया। नाटक में दिखाया गया, पृथ्वीराज चौहान का राजकुमारी संयोगिता का हरण करके कन्नौज से ले जाने के बाद राजा जयचंद का वह अपमान सीने में तीर की तरह चुभ रहा था। वह किसी कीमत पर पृथ्वीराज का विनाश चाहता था। जयचंद अकेले पृथ्वीराज से युद्ध करने का साहस नहीं कर सकता था। उसने गोरी का साथ देते हुए अपने देश में विद्रोह करता है। युद्ध में पृथ्वीराज की हार हुई और उधर देशद्रोही जयचंद को मार उसके राज्य पर अधिकार कर लिया जाता है। आक्रामक होते हुए भी पृथ्वी राज के लिए आदर का भाव रखता है किंतु वह गद्दारों से नफरत करता है।

आठवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के पांचवें दिन नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से नाटक का मंचन

गांधी के चरण चंपारण में दिखा निलहे गोरों का आतंक

पटना • [illegible]

चंपारण में गांधी [illegible] के रूप में उभरे और [illegible] के लिए चलाए जा रहे आंदोलन [illegible]। कालिदास रंगालय में सोमवार की शाम मंचित नाटक 'गांधी के चरण चंपारण' में, कालिदास रंगालय में चल रहे आठवें अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव के पांचवें दिन नाट्य संस्था कला जागरण की ओर से इस नाटक का मंचन किया गया था। अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा के लिखे इस नाटक का निर्देशन किया था वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार ने। नाटक में दिखाया गया कि चंपारण में नील के कारोबारी अंग्रेज या निलहे गोरों का आतंक काफी बढ़ा हुआ था। ऐसे में चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल ने किसानों की समस्या दूर करने के लिए गांधीजी से मिलने [illegible] [illegible] गांधी [illegible] [illegible] कानपुर, [illegible] गांधी जी उन्हें [illegible] [illegible] गांधी को [illegible] शुक्ल बने [illegible] कुमार और [illegible] प्रसाद [illegible]। अन्य कलाकारों में मिथिलेश सिन्हा, सुनीता भारती, [illegible] राय, [illegible], [illegible] सिंह, [illegible] राज, संतोष कुमार दास, [illegible] तिवारी, [illegible], अर्पित शर्मा, [illegible] सिंह, [illegible] आदि थे। [illegible] परिकल्पना [illegible] गांगुली की थी।

नाटक ने दिया संदेश धरती के लिए जरूरी है सृजन

पटना | नाट्य संस्था रंगसृष्टि की ओर से सोमवार को प्रेमचंद रंगशाला में नाटक सृष्टि का मंचन हुआ। महेश कटारे द्वारा [illegible] आदमी, आवा और सृष्टि पर यह नाटक आधारित था। इस नाटक के निर्देशक थे संजय कुमार। नाटक में दार्शनिक अंदाज में कथा आगे बढ़ती है। नाटक का पात्र एक मनुष्य है। यह मनुष्य अपनी निरंतर यात्रा करते हुए एक समय के एक ऐसे धुंध में फंस जाता है जहां से उसे आगे निकलने का मार्ग नहीं मिलता। निरंतर यात्रा के क्रम में अपने अनुभव और ज्ञान को अपनी पीठ पर [illegible] उतार कर व्याकुलता [illegible] [illegible] मित्र के आगमन पर बहुत खुश होता है।

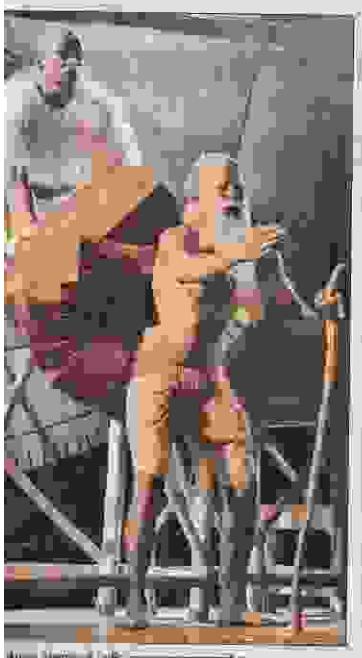

ये थे कलाकार : धीरज कुमार, पूजा भारती, रवि कुमार, पवन कुमार, राजदीप कुमार, उज्ज्वल कुमार, आशुतोष कुमार, रंधीर कुमार।

पटना LIVE सिटी

मंगलवार • 07 मार्च 2017

हिन्दुस्तान

[illegible]द रंगशाला और कालिदास रंगालय में नाटकों का मंचन, दोनों जगह मानव जीवन की यात्रा पर केंद्रित दो नाटकों को कलाकारों ने किया जीवंत

[illegible]ोई समाज के लिए निकला तो कोई खुद के लिए

प्रेमचंद रंगशाला में 'सृष्टि' नाटक का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

दो नाटक देखने को मिले और दोनों मानव की यात्रा पर केंद्रित नाटक थे। सोमवार शाम कालिदास रंगालय और प्रेमचंद रंगशाला दोनों जगह नाटक हुए। कालिदास रंगालय में गांधी की चंपारण यात्रा को मंच पर उभारा गया, तो प्रेमचंद रंगशाला में महत्वाकांक्षी मानव की यात्रा को दिखाया गया।

पटना | कार्यालय संवाददाता

जीवन की यात्रा भी अजीब होती है। कोई खुद के लिए यात्रा करता है, तो कोई पूरी [illegible] समाज को समर्पित कर देता है। दोनों तरह के लोगों की अपनी-अपनी दुनिया होती है। इसी दुनिया को अपने-अपने अंदाज में कलाकारों ने मंच पर उतारा। कालिदास रंगालय में 'गांधी के चरण चंपारण' का मंचन हुआ, तो प्रेमचंद रंगशाला में 'सृष्टि' नाटक का मंचन हुआ। [illegible]

सोमवार को कालिदास रंगालय में कलाकारों ने गांधी की चंपारण यात्रा को मंच पर उतारा। • हिन्दुस्तान

गांधी की यात्रा : [illegible]

गांधी के चरण चंपारण में के कलाकार : अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, सतीन्द्र कुमार, आमिर हक, मिथिलेश कुमार सिन्हा, सुनीता भारती, [illegible] लाल राय, आकाश कुमार, [illegible] कुमार, [illegible] कुमारी, [illegible] कुमार, [illegible] सिंह, अंकित राज, मनीष कुमार दास, विवेक कुमार तिवारी, मुकेश कुमार यादव, अर्पित शर्मा, मिलेश कुमार सिंह, सतीश सतपुते।

सृष्टि नाटक के कलाकार : धीरज कुमार, पूजा कुमारी, रवि कुमार, पवन कुमार, राजदीप कुमार, उज्ज्वल कुमार, आशुतोष कुमार, रंधीर कुमार।

महत्वाकांक्षी यात्रा : प्रेमचंद रंगशाला में रंगसृष्टि संस्था के कलाकारों ने 'सृष्टि' नाटक का मंचन संजय कुमार के निर्देशन में किया। [illegible]

सीबीएसई [illegible] वैक्सीन [illegible]

[illegible]

लायंस क्लब [illegible] किया पुरस्कृत

[illegible]

Kursi Puran
(कुर्सी पुराण)

विटी

prabhatkhabar.com

लाइफ@पटना

पॉलिटिकल ड्रामा. नाटक में नेता और कुरसी की दिखायी गयी लीला

यहां कुरसी जाते ही जैसे मिट जाती है 'खास' की पहचान

कालिदास रंगालय के मंच पर कुरसी के लिए मारामारी की कहानी बयां करते कलाकार.

नाटक का मंचन करते कलाकार.

■ **कलाकारों ने दिखाया नेता बनना है कितना आसान**

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

अजी नेता बनना, तो बहुत आसान काम है, लेकिन मुझे भाषण देनी नहीं आती रामु की इस सवाल पर प्यारेलाल कहता है कि तू भी कमाल करता है. चुनावी भाषण के लिए और करना ही क्या होता है? एक फॉर्मूला याद रखना बस. अरे ऐसे मौके पर सत्ता में आने के पहले देश की गड़बड़ियों के पीछे खुरबार सरकार का हाल बताइयेगा और सत्ता में आने के बाद उन्हीं गड़बड़ियों के पीछे किसी विदेशी शक्ति का हाथ. सत्ता में आने के लिए ये बातें किसी गांव या शहर में नहीं, बल्कि कालिदास रंगालय के मंच पर देखने को मिला. मौका था यहां नाट्य संस्था कला जागरण द्वारा कुरसी पुराण नाटक का मंचन किया गया, जिसमें कुर्सी पाने के लिए कई तरह से दृश्यों को दर्शाया गया, जिसे देखने के लिए दर्शकों की भीड़ जमती गयी. नाटक के कई दमदार डायलॉग्स व दृश्यों को देख दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी. इस हास्य नाटक का निर्देशन सतिन्द्र कुमार द्वारा किया गया. नाट्य में कई हास्य पात्र थे, जिन्होंने लोगों को हंसने पर मजबूर कर दिया.

यहां धोखा ही धरम है

झूठ और फरेब की दुनिया में कोई भी इनसान किसी का नहीं होता. यहां धोखा ही धरम है. स्वार्थ ही ईमान है और एक दूसरे की लाश पर चढ़ कर अपनी मंजिल हासिल करना चाहते हैं. राजनीति की दुनिया में यह बातें आम होती है. नाटक में कुछ इन्हीं बातों का जिक्र किया गया, जहां बेजान कुर्सी ही इनसान की पहचान होती है. कुरसी गयी तो पहचान मिट जाती है. यहां प्यारे लाल एकलौते पार्टी का अध्यक्ष है और वह अपनी चालाकी से एक सीधे-साधे इंसान रामु को राम प्रसाद औरत वाला के अवतार में एम पी के चुनाव में खड़ा करता है. वे अवसरवादी चमचे, कलयुगि बाबाओं और झूठे वादों के बदौलत एमपी बन भी जाते हैं. वे समाज में नारी सशक्तीकरण, दलित और लोगों का कल्याण तो नहीं होता है, लेकिन यहां राम प्रसाद जैसे नेताओं का कल्याण जरूर होता है. ऐसे में रामप्रसाद की प्रेमिका को आगे के लिए कुछ बातें सुझाती है और वे प्यारेलाल को सबक सिखाने के लिए जुट जाती है. कोतवाल की मदद से शहर में दंगा करवा कर इसकी जिम्मेवारी प्यारे लाल पर मढ़ती है. इसके बाद उसे उसे राम प्रसाद की पार्टी का अध्यक्ष बना दिया जाता है और प्यारे लाल की कुर्सी चली जाती है. कुर्सी जाते लोग उसे पहचानना छोड़ देते हैं. नाटक में कुर्सी पुराण की कहानी को कलाकारों ने बखूबी अंदाज में पेश किया.

मंच पर

- प्यारे लाल- गुंजन कुमार
- प्रधान- स्वेश कुमार
- कोतवाल सिंह- डॉ शंकर सुमन
- चित्रा- सुनीता भारती
- छप्पन- सुनीता कुमारी
- अखबारी लाल- कुमुद रंजन
- राम प्रसाद- आमिर हक
- भोला- अमित कुमार
- सच्चिदा स्वामी- मिथिलेश सिन्हा

अच्छे सोच के लिए अच्छा

150 बच्चों को मुफ्त में

Khuchchar
(खुच्चर)

मुंशी प्रेमचंद ने भारतीय समाज को नई दिशा दी

जयंती पर श्रद्धांजलि

पटना | कार्यालय संवाददाता

शहर के साहित्यकार-कलाकार मुंशी प्रेमचंद की जयंती मनाने प्रेमचंद रंगशाला में शाम पहुंचे। बिहार संगीत-नाटक अकादमी की ओर से कथा सम्राट प्रेमचंद की 136 वीं जयंती रविवार को मनाई गई। कला संस्कृति मंत्री शिवचंद्र राम ने दीप जलाकर दो दिवसीय आयोजन की शुरुआत की। इसके पहले उन्होंने जयंती पर रंगशाला परिसर में पौधारोपण भी किया। इस मौके पर उन्होंने रंगशाला परिसर में मुंशी प्रेमचंद की आदमकद प्रतिमा लगाने की घोषणा की।

प्रेमचंद के जीवन पर प्रकाश : संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष कवि आलोक धन्वा ने कहा कि दिशा के इस दौर में प्रेमचंद को याद करना बहुत जरूरी है। कला संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद ने कहा कि शायद ही कोई हिंदी भाषी होगा जिसने प्रेमचंद की कोई न कोई कृति न पढ़ी हो। साथिय तारानंद वियोगी ने कहा कि 20 वीं सदी में प्रेमचंद ने भारतीय लेखन को एक नई दिशा और मार्गदर्शन दिया।

कहानियों का मंचन : इस मौके पर अभियान सांस्कृतिक मंच की ओर से अनीश अंकुर के निर्देशन में मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'गुल्ली-डंडा' का मंचन हुआ। नाटक में अनीश अंकुर, जयप्रकाश, रघु, कुणाल, गौतम और उत्तम ने बढ़िया अभिनय किया। वहीं दूसरी प्रस्तुति के रूप में माध्यम फाउंडेशन के कलाकारों ने धर्मेश मेहता के निर्देशन में 'खुच्चड़' नाटक किया। नाटक में ऑफिस और घर के खुच्चड़पन को दिखाने के बहाने जीवन में सूझबूझ के महत्व को बताया गया। मौके पर कवि सत्यनारायण, फणीश सिंह, कासिम खुर्शीद, शंकर कैमूरी, सुमन कुमार, विभा सिन्हा, सोमा चक्रवर्ती, मुन्ना जी सहित कई लोग उपस्थित थे। संचालन रूपम ने किया। सोमवार को भी नाटक होगा।

उधर, विकास मंच की ओर से निशा साईं दरबार हॉल हड़ताली मोड़ बेऊर में मुंशी प्रेमचंद जयंती पर बैठक आयोजित हुई। जिसकी अध्यक्षता नंद किशोर यादव ने की। प्रेमचंद-शरतचंद्र जयंती समारोह कमेटी ने मुंशी प्रेमचंद की 136वीं जयंती पर सभा का आयोजन किया। कमेटी के अध्यक्ष श्री पूर्णेन्दु मुखर्जी ने प्रेमचंद को महान मानवतावादी साहित्यकार बताया।

प्रेमचंद रंगशाला में मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'गुल्ली-डंडा' का मंचन कर दी गई श्रद्धांजलि। ● हिन्दुस्तान

जागरण सिटी हलचल

पटना

कलाकारों ने खेला 'गुल्ली-डंडा'

- कलाकारों ने प्रेमचंद की कहानियों का मंचन कर दी श्रद्धांजलि
- गुल्ली-डंडा व खुच्चड़ का प्रेमचंद रंगशाला में किया मंचन

कलाकारों ने प्रेमचंद को उनकी जयंती पर अपने अंदाज में श्रद्धांजलि दी। प्रेमचंद रंगशाला में कथा सम्राट की जयंती के मौके पर उनकी कहानियों का मंचन किया गया। आयोजन कला संस्कृति युवा विभाग एवं बिहार संगीत नाटक अकादमी ने किया था। अनीश अंकुर द्वारा निर्देशित प्रेमचंद की कहानी गुल्ली-डंडा के बाद माध्यम फाउंडेशन धर्मेश मेहता के निर्देशन में खुच्चड़ का मंचन हुआ। गुल्ली-डंडा में कहानी कहने की शैली का भी समावेश था। कार्यक्रम का उद्घाटन कला संस्कृति एवं युवा विभाग के प्रधान सचिव चैतन्य प्रसाद व बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा ने किया।

खेल-खेल में छोटा भाई बन जाता है अफसर : नाटक गुल्ली-डंडा में बड़ा भाई दिखावटी मेहनत करके पढ़ाई करता है लेकिन वह बार-बार फेल हो जाता है। दूसरी ओर छोटा भाई पढ़ाई के साथ खेलकूद भी खूब करता है। फिर भी वह अव्वल दर्जे से पास होता है। इसी तरह समय गुजरते हुए छोटा भाई अफसर बन जाता है और बड़ा भाई खेती बाड़ी का काम संभाल लेता है। नाटक में उत्तम कुमार, रघु, जय प्रकाश, अनीश अंकुर आदि कलाकारों के अभिनय को दर्शकों ने सराहा।

प्रेमचंद रंगशाला में प्रेमचंद की कहानियों का मंचन करते कलाकार जागरण

जीवन में सही सूझ-बूझ की जरूरत : खुच्चड़ नाटक में कलाकारों ने जिंदगी जीने का संदेश दिया। मुंशी जी के कार्यालय में एक टाइपिस्ट स्टाफ और एक नौकर गणेशदास है, जो सीधा-सादा, अपने काम में मगन रहने वाला है। ऑफिस के स्टाफ उसे तंग कर परेशान करते हैं और बात-बात पर मजे लेते हैं। उसे देखकर मुंशी जी अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, अंत में मिलता पड़ता है। कलाकारों में धर्मेश मेहता, सुनीता भारती, राकेश कुमार, गुलाब कुमार, आनंद, आमिर, दीपक कुमार, कुणाल, सिकंदर, मुन्ना कुमारी आदि ने अभिनय किया।

अमृतराय ने प्रेमा को दी जिंदगी

पटना : अनिल कुमार मुखर्जी रंगशाला में व कला संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार सरकार के सौजन्य से बिहार आर्ट थियेटर द्वारा मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'प्रतिज्ञा' का मंचन कालिदास रंगालय में रविवार को हुआ। निर्देशन अरुण कुमार ने किया। नाटक में बदरी प्रसाद के परिवार में उनका पुत्र कमला, पुत्रवधू सुमित्रा, पुत्री प्रेमा और नौकर बल्लू के साथ प्रेमा की कहानी घूमती रहती है। मित्र के घर में आने के बाद उसका भाई कमला प्रेमा को फिर से अमृत पूर्णा के साथ व्यभिचार करता है। पूर्णा की आबरू बचाने के लिए अमृतराय आगे आता है। अरुणा, अनिता, उज्ज्वला, सुधीर, निधि कुमारी आदि ने अभिनय किया।